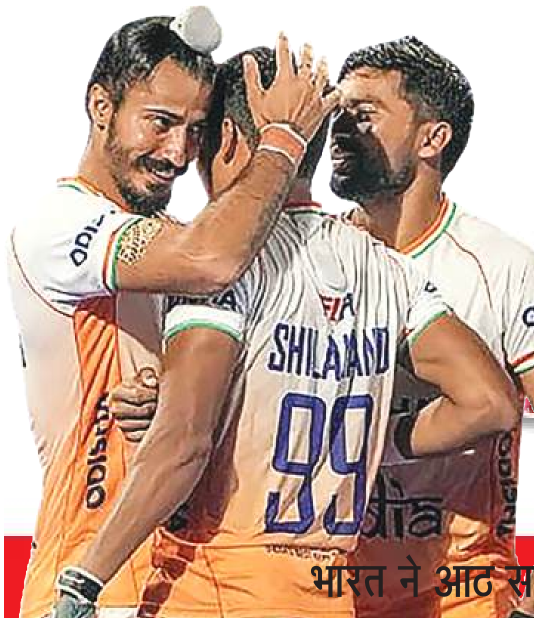

सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 11 ● अंकः 212 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, सोमवार 8 सितम्बर, 2025

मूल्य ₹ 3/-

फिजीशियन इलाज करता है, लेकिन प्रकृति ठीक करती है।

–हिप्पक्रेटीस

भारत ने आठ साल बाद जीता... 7 | उत्तराखंड में बदलेंगे सियासी... 3 | लाभ नहीं देने वालों को परेशान... 2

फुंसी बनी फोड़ा, एबीवीपी ने हल्ला बोला

धरना प्रदर्शन और भूख हड़ताल के जरिये बना रहे हैं दबाव

सकते में योगी सरकार, डैमेज कंट्रोल में जुटी

- » एबीवीपी के प्रतिनिधि मंडल से सीएम ने की मुलाकात
- » सीओ सस्पेंड, बुल्डोजर कार्रवाई लेकिन मान नहीं रही छात्र परिषद
- » सरकार को स्थगित करना पड़ा वन नेशन वन इलेक्शन छात्र संवाद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। योगी सरकार के उत्तर प्रदेश में उदय के बाद यह पहला सशक्त विरोध है जिस पर सरकार बैकफुट पर है और ताबड़तोड़ कार्रवाई करने के लिए मजबूर हुई है। मामला अखिल भारतीय विधायर्थी परिषद से जुड़ा है और परिषद ने अपनी ही बनवाई सरकार के खिलाफ बगावती बिगुल फुंका रखा है। सड़कों पर ऐसे नारे लगाये जा रहे हैं जो विपक्षी पार्टियां भी नहीं लगाती।

भूख हड़ताल और आर पार के एलान ने सीएम योगी को हलकान कर दिया है। यही नहीं एबीवीपी के विरोध को देखते हुए वन नेशनल वन इलेक्शन पर छात्र संवाद को भी कैसिंल करना पड़ा है। बीती रात विधार्थी परिषद के एक डेलीगेशन ने सीएम योगी से मुलाकात कर बीच का रास्ता निकालने की कोशिश की है। यह कोशिश कितना रंग लाती है यह समय बताएगा। लेकिन इतना तय है कि बाराबंकी में विरोध प्रदर्शन के दौरान जिस बेरहमी से छात्रों को कूटा गया उसकी कसक पिटे छात्रों के दिलों से निकलना मुश्किल है।

धधक रहा है छात्रों का आक्रोश

बाराबंकी के श्रीराम स्वरूप मेमोरियल विश्वविद्यालय में बीते हफ्ते वह घटना हुई जिसने पूरे प्रदेश की राजनीति को झकझोर कर रख दिया। एबीवीपी के छात्र विश्वविद्यालय प्रबंधन और प्रशासन से टकराव की स्थिति में है। आरोप है कि छात्रों की आवाज दबाने और आंदोलन रोकने के लिए पुलिस को बुलाया गया। पुलिस ने जो किया वह लोकतांत्रिक व्यवस्था पर सवाल खड़े करता है–छात्रों पर बेरहमी से लाठियां बरसाई गईं लड़कियों तक को नहीं बख्शा गया। गवाहों के मुताबिक छात्र केवल अपनी मांगें रख रहे थे। लेकिन पुलिस ने जिस बर्बरता से कार्रवाई की उसने माहौल और भड़का। सोशल मीडिया पर छात्रों के खून से लथपथ चेहरे और टूटे बेंचों की तस्वीरें वायरल हो गईं। इन तस्वीरों ने न केवल विश्वविद्यालय की दीवारों के भीतर बल्कि पूरे प्रदेश में आक्रोश की आग को फैला दिया।

विपक्ष को मिला अप्रत्याशित तोहफा

अब तक विपक्ष योगी सरकार के खिलाफ बड़े आंदोलन खड़े करने में नाकाम रहा है। लेकिन एबीवीपी के इस विद्रोह ने विपक्ष को अप्रत्याशित तोहफा दिया है। विपक्ष केवल इतना कह रहा है कि देखो तुम्हारे अपने ही नाराज हैं। यह तंज सरकार की साख पर सीधा वार है। उत्तर प्रदेश की राजनीति में युवा वोटरों का दबदबा है। भाजपा अब तक एबीवीपी जैसे छात्र संगठनों के इर्द-गिर्द राजनीति साधती आई है। लेकिन अगर एबीवीपी के आंदोलन से यह संदेश जाता है कि सरकार छात्रों की आवाज दबा रही है तो यह नाराजगी भविष्य के चुनावों में भाजपा के लिए खतरनाक साबित हो सकती है।

एबीवीपी ने सरकार को कटघरे में खड़ा किया

ऐसा पहली बार देखने को मिला जब छात्र परिषद ने खुद अपनी ही सरकार के खिलाफ सड़कों पर नारे लगाये। छात्र एकता जिंदाबाद, योगी सरकार होश में आओ जैसे नारे गूंजे। हैरत की बात यह कि ये नारे विपक्ष नहीं बल्कि वही छात्र लगा रहे थे जिनकी पहचान वर्षों से सरकार समर्थक के रूप में रही है। एबीवीपी ने न केवल विरोध प्रदर्शन किए बल्कि भूख हड़ताल पर भी बैठ गई। यह संदेश साफ था कि अब समझौते से बात नहीं बनेगी।

सीएम योगी की छवि को धक्का

सीएम योगी आदित्यनाथ की छवि एक ऐसे मुख्यमंत्री की रही है जो किसी से दबते नहीं किसी मुद्दे पर झुकते नहीं। लेकिन इस बार हालात अलग हैं। सरकार को कार्यक्रम रद्द करना पड़ा पुलिस अधिकारियों को हटाना पड़ा और सीधे सीएम को छात्रों से मिलना पड़ा। यह सब कुछ बताता है कि सरकार दबाव में आई है।

आंदोलन की आग को शांत करने में जुटी सरकार

तेजी से फैलती आंदोलन की आग को शांत करने के लिए सीएम योगी आदित्यनाथ से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पदाधिकारियों की मुलाकात हुई। इस मुलाकात के दौरान एबीवीपी पदाधिकारियों ने रामस्वरूप विवि प्रकरण के मामले में सीएम योगी को विस्तार से जानकारी दी है। उन्होंने यह भी बताया कि किस तरह पुलिस ने लाठीचार्ज किया। मुलाकात करने वाले प्रतिनिधि मंडल में पूर्वी यूपी के क्षेत्रीय संगठन मंत्री घनश्याम शाही, पश्चिमी यूपी के क्षेत्रीय संगठन मंत्री मनोज निखरा, राष्ट्रीय मंत्री अंकित शुक्ला और राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सदस्य सृष्टि सिंह मौजूद रही।

ग्रेट निकोबार द्वीप प्रोजेक्ट पर राहुल गांधी ने जताई चिंता

- » शेयर किया सोनिया गांधी का लेख
- » भाजपा सरकार को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सोमवार को कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी का एक लेख सोशल मीडिया पर साझा किया, जिसमें ग्रेट निकोबार द्वीप परियोजना द्वारा निकोबार के लोगों और उसके नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र पर हो रहे अन्याय को उजागर किया गया। ग्रेट निकोबार द्वीप परियोजना, ग्रेट निकोबार द्वीप पर भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है जिसका उद्देश्य समग्र विकास और रणनीतिक स्थिति बनाना है, जिसमें एक ट्रांसशिपमेंट पोर्ट, एक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, एक ऊर्जा संयंत्र और एक टाउनशिप शामिल है।

एक्स पर साझा की गई एक पोस्ट में, राहुल गांधी ने कहा कि ग्रेट निकोबार द्वीप परियोजना एक दुस्साहस है, जो आदिवासियों के अधिकारों को कुचल रही है और कानूनी व विचार–विमर्श प्रक्रियाओं का मजाक उड़ा रही है। इस लेख के माध्यम से, कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी इस परियोजना द्वारा निकोबार के लोगों और उसके नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र पर हो रहे अन्याय को उजागर करती हैं।

'मूल आदिवासी समुदायों के अस्तित्व के लिए खतरा'

सोनिया गांधी ने यह भी तर्क दिया कि शोम्पेन को और भी बड़े खतरे का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्रालय द्वारा अधिसूचित द्वीप की शोम्पेन नीति के अनुसार, बड़े पैमाने पर विकास प्रस्तावों पर विचार करते समय अधिकारियों को जनजाति के कल्याण और अखंडता को प्राथमिकता देनी होगी। उन्होंने आगे कहा, इसके बजाय, यह परियोजना शोम्पेन जनजातीय अभ्यारण्य के एक बड़े हिस्से को गैर-अधिसूचित करती है, उन वन पारिस्थितिकी प्रणालियों को नष्ट करती है जहां शोम्पेन रहते हैं और इससे द्वीप पर बड़े पैमाने पर लोगों और पर्यटकों की आमद होगी। कांग्रेस नेता ने यह भी कहा कि जनजातीय अधिकारों के संरक्षण के लिए स्थापित संवैधानिक और वैधानिक निकायों को इस पूरी प्रक्रिया में दरकिनार कर दिया गया है।

लाभ नहीं देने वालों को परेशान करती है भाजपा सरकार: अखिलेश यादव

एलडीए के खिलाफ धरनास्थल पहुंचे पूर्व सीएम, पीड़ितों की हरसंभव मदद करने का दिया आश्वासन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने योगी सरकार पर करारा वार करते हुए कहा कि जहां से लाभ नहीं मिलता है उसको भाजपा सरकार परेशान करने लगती है। दरअसल, लखनऊ पारा के आगरा एक्सप्रेसवे के जीरो पॉइंट पर स्थित शुभी ढाबा एवं रेस्टोरेंट के निर्माण को एलडीए ने अवैध बताते हुए सीलिंग की कार्यवाही कर दी। जिस पर ढाबा मालिक किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर भारी संख्या में एलडीए के खिलाफ धरने पर बैठ गए। धरनास्थल पर पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने पहुंचकर पीड़ितों की हरसंभव मदद करने का आश्वासन दिया।

पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश ने सरकार की नाकामियां गिनाते हुए कहा कि योगी सरकार रोजगार पर प्रहार कर रही सरकार बेरोजगार लोगों को और भी बेरोजगार बनाती जा रही है। ढाबा मालिक अभिषेक रेशू यादव ने आरोप लगाते हुए बताया कि एलडीए ने बिना कोई नोटिस और सूचना दिए ही सील करने की कार्रवाई कर दी जिससे एलडीए के खिलाफ किसान यूनियन के बैनर तले धरना दिया जा रहा है। एलडीए के अधिकारियों पर कहा कि जहां से लाभ होता है वहां कार्रवाई नहीं करते हैं। जहां से लाभ नहीं मिलता है वहां पर बिना नोटिस के जाकर सीज कर देती है। सरकार के इशारों पर काम करने वाले लखनऊ विकास प्राधिकरण के अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाई हो।

शिवपाल के खुलासे से यूपी में सियासी बवाल

» अमित शाह के कहने पर शिवपाल ने लड़ा था लोकसभा चुनाव

» बोले सपा नेता- मिला था मंत्री पद का ऑफर!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव के चाचा और वरिष्ठ नेता शिवपाल यादव ने खुलासा किया है कि सपा से अलग होने के बाद वो बीजेपी के संपर्क में थे। इस बयान के बाद से यूपी की सियासत में बवाल मच गया है। उन्होंने कहा कि साल 2022 में बीजेपी ने उनसे संपर्क किया था और उन्हें उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार में शामिल होने मंत्री पद की ऑफ़र दिया था। लेकिन, वो बीजेपी के साथ नहीं गए क्योंकि उन्हें पार्टी की नीयत में खोट दिखाई दी।

सपा नेता शिवपाल यादव ने अखिलेश यादव से अनबन से लेकर तमाम मुद्दों पर खुलकर बात की है। शिवपाल यादव ने साल 2018 में अलग पार्टी बना ली थी, जिसके बाद कुछ सालों तक उन्होंने अपनी पार्टी को आगे बढ़ाने की भी कोशिश की. इस दौरान वो बीजेपी के संपर्क में भी रहे।

शिवपाल यादव से जब ये सवाल किया गया कि वो बीजेपी में किसके संपर्क में थे तो उन्होंने जवाब दिया दिल्ली में नंबर टू (अमित शाह). उन्होंने खुलासा किया कि अमित शाह ने उन्हें मंत्री पद का ऑफर दिया था और मिलने के लिए दिल्ली भी बुलाया था लेकिन वो उनसे मिलने नहीं गए। शिवपाल यादव ने कहा कि उनके मन में ये था कि इन्हें इधर (बीजेपी में) मिलाते रहो और फायदा उठाते रहो..लेना-देना कुछ नहीं. परिवार में फूट रहे...ये एकजुट न हो पाएं..और उसका फायदा उठाओ।यादव ने कहा कि अमित शाह ने मंत्री बनाने का ऑफ़र दिया था.. बुलाया भी था लेकिन मैं गया नहीं था. मेरे मन में था नहीं मंत्री बनने का, नहीं तो मैं चला जाता..मैं तो हमेशा समाजवादी रहा, वहां मुझे क्या मिल जाता. उन्होंने माना कि वो 2017 से ही बीजेपी के संपर्क में थे। अमित शाह के कहने पर ही उन्होंने 2019 में फिरोजाबाद से चुनाव भी लड़ा था।

बड़े भाई के कहने पर बनाई थी अलग पार्टी

शिवपाल यादव ने ये भी दावा किया कि जब अखिलेश यादव से विवाद के बाद वो अलग हो गए थे तो उन्होंने मुलायम सिंह यादव के कहने पर ही अलग पार्टी बनाई थी। उन्होंने कहा कि जब अखिलेश तुमसे बात करना नहीं चाहते है तो अलग से पार्टी बना लो। उन्होंने आशीर्वाद भी दिया था। रामगोपाल यादव से अपने रिश्तों पर भी उन्होंने खुलकर बात की और बताया कि अब उन दोनों के रिश्ते पहले से बेहतर हो गए हैं। जब वो मिलते हैं तो पहले से ही बेहतर तरीके से बात होती है. माहौल अच्छा होता है। बता दें कि 2022 में शिवपाल यादव ने सपा के साथ अपनी पार्टी का विलय कर लिया था।

विभाजनकारी ताकतों से आगाह रहें: सीएम विजयन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोच्चि। केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने आगाह किया कि कुछ स्वार्थी लोग समाज में सांप्रदायिक भावना फैलाकर फूट डालने की जानबूझकर कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने फेसबुक पर पोस्ट में कहा, ''कुछ लोग यह प्रचार करते हैं कि जाति मानवता से बड़ी है और केरल जैसे राज्य में भी ऐसे विचार जोर पकड़ रहे हैं, जबकि इस राज्य ने एक समय धर्म और जाति के कारण फैले अंधविश्वास एवं कुप्रथाओं को जड़ से खत्म कर दिया था।

विजयन ने यह बात 20वीं सदी के संत और समाज सुधारक श्री नारायण गुरु की 171वीं जयंती पर उन्हें याद करते हुए कही। मुख्यमंत्री ने फेसबुक पर अपने पोस्ट में गुरु को महान सुधारक के रूप में याद किया, जिन्होंने लोगों को ज्ञान के माध्यम से एकजुट होने और शिक्षित होने तथा जाति-धर्म से ऊपर उठने का संदेश दिया। विजयन ने कहा कि हालांकि आजकल सांप्रदायिक ताकतें नारायण गुरु की विरासत को अपने नाम करने की कोशिश कर रही हैं। वामपंथी नेता ने गुरु को ऐसे सुधारक के रूप में याद किया, जिन्होंने उच्च जाति के वर्चस्व और सामाजिक बुराइयों पर खुलकर सवाल उठाए और जाति के आधार पर होने वाले अत्याचारों तथा आर्थिक शोषण के खिलाफ दृढ़ता से विरोध किया।

टैरिफ के आतंक से निपटने के लिये ठोस कदम उठाए सरकार: मायावती

» बसपा प्रमुख बोलीं- देश की जनता को परेशान करने वाली समस्याएं बढ़ीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की अध्यक्ष मायावती ने अमेरिका द्वारा भारतीय वस्तुओं पर लगाए गए 50 प्रतिशत टैरिफ की आलोचना करते हुए कहा कि ट्रंप टैरिफ के आतंक से निपटने के लिये केंद्र सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए।

मायावती ने यहां पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ एक बैठक में अपने संबोधन के दौरान अमेरिकी टैरिफ का जिक्र करते हुए कहा, अमेरिका द्वारा थोपे गये 50 प्रतिशत ट्रंप टैरिफ के आतंक के कारण पैदा हुई चुनौतियों से निपटने के लिए सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को देश की जनता के लाभ के लिए मजबूत और सार्थक कदम उठाने चाहिए। उन्होंने कहा, यदि ऐसा नहीं किया गया तो देश की जनता को परेशान करने वाली समस्याएं जैसे गरीबी, मुद्रास्फीति, बेरोजगारी, अशिक्षा, पलायन और भी बदतर हो जाएंगी तथा देश के सम्मान और वैश्विक प्रतिष्ठा पर इसका असर पड़ेगा।

मायावती ने यह टिप्पणी ऐसे समय में की है जब एक दिन पहले ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि वह भारत-अमेरिका संबंधों के सकारात्मक आकलन के लिए अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सराहना करते हैं। इससे पहले, ट्रंप ने दोनों देशों के विशेष संबंध की सराहना की, जिसे दोनों देशों के रिश्तों में आए तनाव को खत्म करने के प्रयास के तौर पर देखा गया।

संगठन के कार्यों की समीक्षा की

बसपा सुप्रीमो पार्टी प्रदेश कार्यालय पर प्रदेश के सभी पदाधिकारियों और जिलाध्यक्षों के साथ संगठन के कार्यों की समीक्षा कर रही थीं। उन्होंने संगठन के बताए गए कार्यों का 80 प्रतिशत लक्ष्य हासिल करने पर संतोष व्यक्त करने के साथ बचे कार्यों के बाबत नए दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने सभी राज्यव्यापी कार्यक्रम बसपा संस्थापक कांशीराम के आगामी 9 अक्टूबर को होने वाले परिनिर्वाण दिवस के बाद शुरू करने को कहा।

पूजा स्थलों, महापुरुषों का निरादर करने की हो रही राजनीतिक साजिश

बहुजन समाज पार्टी की अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने कहा कि यूपी सहित दूसरे राज्यों में भी विभिन्न धर्मों के पूजास्थलों एवं उनके संतों, गुरुओं व महापुरुषों आदि का निरादर करके सामाजिक, साम्प्रदायिक व राजनीतिक हालात बिगा?ने की राजनीतिक साजिश हो रही है। इस पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि सभी सरकारों को जातिवादी, सांप्रदायिक व द्वेषपूर्ण राजनीति को त्यागकर ऐसे आपराधिक तत्वों के प्रति कड़ी कानूनी कार्रवाई करके कानून का राज जरूर स्थापित करना चाहिए।

नौ अक्टूबर को बसपा करेगी शक्ति प्रदर्शन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बसपा सुप्रीमो ने कहा कि कांशीराम के परिनिर्वाण दिवस का कार्यक्रम राजधानी स्थित कांशीराम स्मारक स्थल में आगामी 9 अक्तूबर को होगा, जिसमें वह पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों को वह संबोधित करेंगी।

उन्होंने कहा कि पार्टी का पुनर्गठन करने के बाद राज्य स्तर पर होने वाला यह पहला बड़ा कार्यक्रम है। इसमें प्रदेश भर से आने वाले कार्यकर्ताओं के रहने और खाने-पीने की अलग से समुचित व्यवस्था की गई है। स्मारक स्थल के जीर्णोद्धार की वजह से लंबे समय के बाद उनके नेतृत्व में कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है, जिसमें लाखों कार्यकर्ता और समर्थक जुटेंगे।

उत्तराखंड में बदलेंगे सियासी समीकरण

राहुल गांधी की ओबीसी पर मोर्चाबंदी

» हरीश रावत का ब्राह्मण कार्ड

» 2017 में भाजपा की बड़ी जीत का एक कारण ब्राह्मण मतदाता थे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। पहाड़ में आज कल बाढ़ से जहां जीवन प्रभावित हैं। वहीं वहां की राजनीति में भी हालात उतार-चढ़ाव वाले बने हुए हैं। उत्तराखंड में कांग्रेस नेता हरीश रावत ब्राह्मणों को रिझाने में लगे हैं जो राहुल गांधी की ओबीसी राजनीति से अलग है। रावत कांग्रेस को स्वभाव से ब्राह्मण बताते हुए नेहरू जैसे नेताओं का उदाहरण दे रहे हैं। यह प्रयास कांग्रेस से ब्राह्मण मतदाताओं की दूरी कम करने के लिए है। 2017 में भाजपा की बड़ी जीत का एक कारण ब्राह्मण मतदाताओं का ध्रुवीकरण माना गया था।

पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत यानी हरदा इन दिनों कांग्रेस के ब्राह्मण प्रेम की तान छेड़े हुए हैं। प्रदेश के इस सियासी धुरंधर का यह रवैया उनकी पार्टी के ही शीर्ष नेता व लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी से एकदम उलट है। राहुल जहां ओबीसी और अनुसूचित जाति को साथ लेकर नयी मोर्चाबंदी के आगे कुछ सुनने को तैयार नहीं, वहीं हरदा की कोशिश है कि प्रदेश में ब्राह्मणों के समर्थन को वापस पाया जाए, ताकि सत्ता में वापसी की सूरत बन सके। कांग्रेस में इन दिनों देश और उत्तराखंड के मोर्चे पर राजनीति की अलग-अलग धाराएं बह रही हैं तो यह अकारण नहीं है। वर्ष 2017 और वर्ष 2022 में कांग्रेस को मिली बड़ी पराजय और भाजपा को प्रचंड जीत के केंद्र में हरदा की चिंता का मुख्य कारक यही ब्राह्मण फैक्टर माना जा रहा है।

अब तक हुए विधानसभा के पांच चुनाव

प्रदेश में अब तक विधानसभा के पांच चुनाव हो चुके हैं। इनमें से दो चुनाव के परिणाम ऐसा पहलू सामने रखते हैं, जिसे लेकर कांग्रेस में बेचैनी साफ नजर आती है। इस मध्य हिमालयी राज्य में चुनावी तस्वीर वर्ष 2014 के बाद तब उभरी, जब केंद्र की सत्ता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों में आई। इसके साथ ही सामाजिक समीकरणों ने तेजी से करवट ली। विशेष रूप से दो मैदानी जिलों हरिद्वार और ऊधम सिंह नगर को छोड़कर, शेष पूर्ण अथवा आंशिक पर्वतीय नौ जिलों में 70 में से 50 विधानसभा सीट हैं। हरिद्वार में 11 और ऊधम सिंह नगर में नौ विधानसभा सीट हैं। इन दोनों जिलों की कुल 20 विधानसभा सीट में 11 सीट कांग्रेस के पास हैं। शेष नौ जिलों की सीटों पर चुनाव के गणित को ठाकुर और ब्राह्मण मतदाता सीधे प्रभावित करते हैं। इन दोनों समुदायों की पूरे प्रदेश में कुल औसत भागीदारी 60 प्रतिशत है तो नौ जिलों में यह बढ़कर 65 से 70 प्रतिशत हो जाती है।

उत्तराखंड में विधानसभा चुनावों में भाजपा और कांग्रेस को प्राप्त मत का प्रतिशत

वर्ष	भाजपा	कांग्रेस
2022	44.3	37.90
2017	46.51	33.49
2012	33.13	33.79
2007	31.90	29.59
2002	25.45	26.91

वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर उत्तराखंड में मतदाताओं का ये है सामाजिक समीकरण

राजपूत	-	35 प्रतिशत
ब्राह्मण	-	25 प्रतिशत
अनुसूचित जाति	-	19 प्रतिशत
अनुसूचित जनजाति	-	03 प्रतिशत
ओबीसी व अन्य	-	19 प्रतिशत
मुस्लिम	-	14 प्रतिशत
अन्य अल्पसंख्यक	-	02 प्रतिशत

भाजपा-कांग्रेस में कांटे की टक्कर

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि राजपूत मतदाताओं पर भाजपा की पकड़ तो मजबूत हुई, लेकिन कांग्रेस ने भी अपनी पकड़ बहुत ढीली नहीं होने दी। वहीं, ब्राह्मण मतदाताओं का भाजपा के पक्ष में अपेक्षाकृत अधिक ध्रुवीकरण हुआ है। इसी ध्रुवीकरण के चलते भाजपा ने लगातार दूसरी बार सरकार बनाने में सफलता प्राप्त की।

कांग्रेस से ब्राह्मण समाज की दूरी बनेगी परेशानी

कांग्रेस से ब्राह्मण समाज की दूरी कम करने के लिए ही संभवत हरीश रावत को कहना पड़ा कि कांग्रेस स्वभाव से ब्राह्मण है। इसके लिए उन्होंने पंडित जवाहर लाल नेहरू, पंडित मदन मोहन मालवीय से लेकर पंडित कमलापति त्रिपाठी और पंडित नारायण दत्त तिवारी जैसे नामों का हवाला दिया। हरदा का यह दांव कितना कारगर रहता है, यह आने वाले समय में ही पता चल पाएगा।

भाजपा के 47 और कांग्रेस के 20 विधायक

वर्तमान में भाजपा के 47 और कांग्रेस के 20 विधायक हैं, जबकि बसपा का एक और दो विधायक निर्दल हैं। वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में 19 सीट पाने वाली कांग्रेस ने विधानसभा उपचुनाव में जीत दर्ज कर एक सीट और अपने खाते में बढ़ाई है। पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा को 44.3 प्रतिशत तो कांग्रेस को लगभग 38 प्रतिशत मत प्राप्त हुए। भाजपा के मत प्रतिशत का अंतर छह प्रतिशत से अधिक रहा। वर्ष 2017 में भाजपा का मत प्रतिशत 46.5 पहुंचा था, जबकि कांग्रेस को 33.49 मत प्रतिशत पर सिमटना पड़ गया था। 13 प्रतिशत के इस अंतर के कारण भाजपा रिकार्ड 57 सीट जीतने में सफल रही। वहीं इन दोनों चुनावों से पहले वर्ष 2002 से लेकर वर्ष 2012 में हुए तीन विधानसभा चुनाव में दो बार कांग्रेस और एक बार भाजपा ने सरकार बनाई। इन तीनों चुनावों में जीत का अंतर 0.66 प्रतिशत से 2.31 प्रतिशत से अधिक नहीं रहा।

घाटी की सियासत में उबाल

ईद-ए-मिलाद-उन-नबी की छुट्टी पर बवाल

» एलजी प्रशासन पर बरसे सीएम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर/जम्मू। जम्मू कश्मीर में राजनीतिक उठापटक आरंभ हो गया है। प्रदेश में एक बार फिर छुट्टियों को लेकर सियासत में उबाल है। विवाद की शुरुआत ईद-ए-मिलाद-उन-नबी की छुट्टी को संशोधित न किए जाने पर शिक्षा व चिकित्सा मंत्री सकीना इत्तू के सोशल मीडिया पोस्ट से हुई। उन्होंने इस्लामी कैलेंडर के अनुसार छुट्टी को शुक्रवार के बजाय शनिवार को न किए जाने पर नाराजगी जताते हुए इसे अन्यायपूर्ण कहा।

मंत्री की पोस्ट के बाद पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने छुट्टी संशोधित न करने पर एलजी प्रशासन को आड़े हाथ लिया। उमर ने इसे गैर-निर्वाचित सरकार का अविवेकी कदम करार दिया। इसके बाद मीरवाइज उमर फारूक से लेकर ग्रैंड मुफ्ती और पीडीपी-कांग्रेस भी विरोध में उतर आए। सरकारी कैलेंडर के अनुसार ईद-ए-मिलाद-उन-नबी की छुट्टी पांच सितंबर (शुक्रवार) को तय थी। जबकि इस्लामी कैलेंडर के मुताबिक, जम्मू-कश्मीर में यह त्योहार शनिवार यानी छह सितंबर को पड़ रहा था। इस कारण इसे संशोधित कर पांच के बजाय छह सितंबर को करने के लिए राजस्व विभाग की ओर से एक पत्र सामान्य प्रशासन विभाग (जीएडी) को भेजा गया था। इसके बावजूद तारीख में संशोधन नहीं किए जाने पर कैबिनेट मंत्री सकीना इत्तू ने सबसे पहले नाराजगी जताई। इस्लामी चंद्र कैलेंडर (लूनर कैलेंडर) के अनुसार जम्मू-कश्मीर में शनिवार को ईद-ए-मिलाद मनाई जानी थी, लेकिन प्रशासन ने पहले से जारी छुट्टियों के कैलेंडर में बदलाव नहीं किया। इस कारण सरकारी छुट्टी शुक्रवार को ही रही।

कैबिनेट मंत्री सकीना इत्तू ने नाराजगी जताई

इस पर कैबिनेट मंत्री सकीना इत्तू ने नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि निर्वाचित सरकार के आग्रह के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं की गई। उन्होंने कहा कि दुनिया भर के मुसलमानों के लिए यह एक पवित्र दिन है, लेकिन जम्मू-कश्मीर में इसे सही तारीख पर नहीं मनाया जा रहा है। उन्होंने सवाल उठाया कि चांद दिखने के आधार पर अवकाश तय करने का क्या मतलब है, अगर उसका पालन नहीं करना है। मंत्री ने कहा कि इस तरह के फैसले लेने का अधिकार चुनी हुई सरकार को होना चाहिए। मंत्री की पोस्ट के बाद पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने एक कैलेंडर की फोटो साझा करते हुए कहा कि इसमें साफ लिखा है कि छुट्टी चांद दिखने पर आधारित है। इसका मतलब है कि चांद दिखने के आधार पर छुट्टी की तारीख बदली जा सकती है। उमर ने आरोप लगाया कि गैर-निर्वाचित सरकार ने जानबूझकर छुट्टी में संशोधन नहीं किया, जिससे लोगों की भावनाएं आहत हुई हैं। बता दें कि उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व वाली सरकार ने बीते दिनों पांच दिसंबर और 13 जुलाई की छुट्टी बहाल करने की मांग भी की थी। इसके लिए एक प्रस्ताव बनाकर उनकी सरकार ने एलजी प्रशासन को भेजा था। ये दोनों छुट्टियां अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद रद्द कर दी गई थीं।

सभी धर्मों का सम्मान जरूरी : कांग्रेस

कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता कविंदर शर्मा ने कहा कि जो त्योहार जिस दिन है, उसी दिन मनाया जाना चाहिए। सभी धर्मों का सम्मान जरूरी है। छुट्टी को पुनर्निर्धारित करना बहुत बड़ी बात नहीं थी। त्योहार और धर्म में आस्था को ध्यान में रखते हुए कई फैसले लेने पड़ते हैं।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

ट्रंप के मानवीय फैसलों पर एकजुट हो दुनिया

> अमेरिका सालों से अफ्रीकी लोगों को एचआईवी ग्रस्तों को मुफ्त चिकित्सा मुहैया करवाता आया था। पर, अब उसे घाटे का सौदा दिखने लगा? इसलिए मरीजों की जान की परवाह किए बिना ये गैरजरूरी निर्णय ले लिया। जबकि, उसे पता है कि एचआईवी पीड़ितों की सर्वाधिक संख्या इस समय दक्षिण अफ्रीका में है।

भारत अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के फैसलों तो नाराज है ही अब तो पूरी दुनिया उनके फैसलों से छटपटा रही है। अब उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में एचआईवी पीड़ितों को मुफ्त एचआईवी सेवाएं बंद करके सोचने पर मजबूर कर दिया है। डोनाल्ड ट्रंप विभिन्न देशों पर अनाप-शनाप टैरिफ लगाना, बिलावजह की वंदिशें और कई वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाने जैसे उंटपटांग निर्णयों को लेकर पहले से दुनिया के निशाने पर हैं। 'दक्षिण अफ्रीका' ऐसा मुल्क है जहां 'एचआईवी' मरीजों की संख्या सर्वाधिक है। मोटे तौर पर तकरीबन ढाई लाख से ज्यादा लोग संक्रमित हैं। दक्षिण अफ्रीका के सामने एचआईवी पर नियंत्रण के लिए मात्र जरिया 'मुफ्त अमेरिकी चिकित्सा सुविधा' मानी जाती रही है? जिसे पिछले सप्ताह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा बंद करके का ऐलान कर दिया गया। बंदी के निर्णय के कुछ घंटों बाद ही सुविधाएं भी रोक दी गई। इससे निश्चित रूप से एचआईवी संक्रमितों के सामने बड़ी मुसीबत खड़ी होगी? होगी क्या, हो ही गई? सभी जानते हैं कि दक्षिण अफ्रीका में एचआईवी संक्रमितों के लिए अमेरिका की मुफ्त चिकित्सा सुविधा वर्षों से जारी थीं। सुविधा बंद करके अमेरिका ने अमानवीय चेहरे से परिचय कराकर दुनिया में थू-थू भी करा ली है।

अमेरिकी राष्ट्रपति को कोई ये बात समझाए कि इंसानी जीवन से बढ़कर कोई दौलत, कोई शौहरत नहीं होती? किसी भी राष्ट्राध्यक्ष को मरीजों के जीवन से साथ ऐसा खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। जीवन बचाने के लिए नफे-नुकासान की परवाह तो कतई नहीं करनी चाहिए। चिकित्सा सहायता रुकने से एक साथ 2 लाख 22 हजार एड्स संक्रमितों के जीवन को नर्क में धकेला गया है। डोनाल्ड ट्रंप विभिन्न देशों पर अनाप-शनाप टैरिफ लगाना, बिलावजह की वंदिशें और कई वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाने जैसे उंटपटांग निर्णयों को लेकर पहले से दुनिया के निशाने पर हैं। इसी बीच दक्षिण अफ्रीका में एचआईवी पीतों को मुफ्त एचआईवी सेवाएं बंद करके सोचने पर मजबूर कर दिया है। ट्रंप के निर्णयों ने पूरी दुनिया में वैसे ही उथलपुथल मचाई हुई है। मुफ्त सुविधाएं क्यों रोकी गईं? इस गणित को समझना भी जरूर है। दरअसल, एचआईवी दवाओं की लागत दवा के प्रकार, भौगोलिक स्थिति और दवा कंपनियों द्वारा प्रदान की जाने वाली सहायता के आधार पर भिन्न होती हैं। खरीद में एचआईवी की दवाईयां काफी महंगी पती हैं। कीमतें विभिन्न देशों में अलग-अलग रहती हैं। जगहों के आधार पर दवाइयों में बदलाव भी होता है। भारत में, एचआईवी के लिए 'एंटीरेट्रवाइल थेरेपी' और 'एपरेटयूड इनजेक्शन' के अलावा 'ग्लाइड' इस्तेमाल की जाती है जिसके प्रत्येक बॉक्स की कीमत 23 हजार और 15 हजार होती है। बाकी अन्य देश 'टेनोफोविर', 'लेमिवाउडिन', 'डोल्यूटेग्राविर' भी प्रयोग करते हैं।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

समय पूर्व चेतावनी प्रणालियों से कम होगी क्षति

प्रमोद भार्गव

बीती 31 अगस्त की मध्य रात्रि के बाद पूर्वी अफगानिस्तान में 6.0 तीव्रता के आए भूकंप ने बड़ी त्रासदी रच दी। करीब 2200 लोग काल के गाल में समा गए और 3000 से ज्यादा घायल हो गए। भूकंप का केंद्र अफगानिस्तान-पाकिस्तान सीमा पर जलालाबाद नगर से 27 किमी पूर्व में था। इसकी गहराई मात्र 8 से 10 किमी थी। भूकंप से कई गांव मलबे में दबकर बर्बाद हो गए। सर्वाधिक तबाही नंगरहार में हुई है। अमेरिकी भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण ने भी इसे 6.0 तीव्रता का उथला भूकंप बताया है। उथले भूकंप गर्भ से भूमि की सतह पर फूटने के साथ भीषण बर्बादी का कारण बनते हैं। तालिबान सरकार ने बचाव कार्य शुरू कर दिए, लेकिन भूकंप का प्रभाव ऐसे दुर्गम क्षेत्रों में है, जहां पहुंच आसान नहीं। अफगानिस्तान में भूकंपों का आना लगा रहता है। अफगानिस्तान हिंदुकुश पर्वत शृंखला में है, जहां यूरेशियन परत, अरेबियन परत और इंडियन परत के परस्पर टकराव से भूकंप आते हैं।

इससे प्रतिवर्ष करीब 100 भूकंप आते हैं लेकिन 6.0 तीव्रता के ऊपर का भूकंप असाधारण होता है। यहां भारतीय परत का यूरेशियन परत से टकराव 5 मिमी प्रति वर्ष गति से होता है। नंगरहार और कुनार पूर्वी प्रांत पाकिस्तान सीमा पर हैं जहां फाल्ट लाइंस सक्रिय हैं। जलवायु परिवर्तन के चलते इस पूरे क्षेत्र में भूस्खलन का खतरा भी है। भूकंप की चेतावनी प्रणालियां अनेक देशों में संचालित हैं लेकिन वह भू-गर्भ में हो रही हलचलों की सटीक जानकारी समय पूर्व देने में लगभग असमर्थ हैं। प्राकृतिक आपदाओं की जानकारी देने वाले अमेरिका, जापान, भारत, नेपाल, चीन और अन्य देशों में भूकंप आते ही रहते हैं। सवाल है, चांद और मंगल पर मानव बस्तियां बसाने का सपना और पाताल की गहराइयां नाप लेने का दावा करने वाले वैज्ञानिक आखिर पृथ्वी के नीचे उत्पात मचा रही हलचलों की जानकारी पाने में क्यों असफल हैं? अमेरिका व भारत समेत अनेक देश मौसम व भूगर्भीय हलचल की जानकारी देने वाले उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित कर चुके हैं।

हिंदूकुश क्षेत्र में आया यह भूकंप भारत के लिए भी चेतावनी है। यहां भी कई राज्य इस लिहाज से संवेदनशील है। विशेषज्ञों व पर्यावरणविदों की मानें तो सभी भूकंप प्राकृतिक नहीं होते, बल्कि उन्हें विकराल बनाने में मानवीय दखल शामिल है। इसीलिए इस भूकंप को स्थानीय भू-गर्भीय विविधता का कारण माना गया है। प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन से छोटे भूकंपों की पृष्ठभूमि तैयार हो रही है। भविष्य में इन्हीं भूकंपों की व्यापकता और विकरालता बढ़ जाती है। पहले 13 सालों में एक बार भूकंप आने की आशंका रहती थी, लेकिन अब यह घटकर 4 साल हो गई। यही नहीं, भूकंपों का वैज्ञानिक आकलन करने से यह भी पता चला कि भूकंपीय विस्फोट में जो ऊर्जा निकलती है, उसकी मात्रा भी पहले की तुलना में ज्यादा शक्तिशाली हुई है। अप्रैल, 2015 में नेपाल में आये भूकंप से 20 थर्मोन्यूक्लियर हाइड्रोजन बमों के बराबर ऊर्जा निकली थी। यहां हुआ प्रत्येक विस्फोट हिरोशिमा-नागासाकी में गिराए गए परमाणु बमों से भी कई गुना ज्यादा ताकतवर था। जापान और फिर क्वोटो में आए सिलसिलेवार भूकंपों से पता चला कि धरती के गर्भ में अंगड़ाई ले रही भूकंपीय हलचलें महानगरीय विकास और आबादी के लिए अधिक खतरनाक साबित हो रही हैं। ये हलचलें भारत, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, चीन और बांग्लादेश की धरती के नीचे भी अंगड़ाई ले रही हैं। इसलिए इन देशों के महानगर भूकंप के मुहाने पर खड़े हैं। विकास में पर्यावरण की अनदेखी प्रकृति को प्रकोप में बदल रही है। हैरानीजनक कि वैज्ञानिक आज तक ऐसी तकनीक ईजाद करने में असफल रहे, जिससे भूकंप की जानकारी आने से पहले मिल जाए। वैज्ञानिक मान्यता है कि करीब साढ़े पांच करोड़ साल पहले भारत और आस्ट्रेलिया को जोड़े रखने वाली भूगर्भीय परतें एक-दूसरे से अलग हो गईं और वे यूरेशिया परत से जा टकराईं। इस टक्कर से हिमालय पर्वतमाला अस्तित्व में आई और धरती की विभिन्न परतों के बीच दरारें बनीं।

हिमालय पर्वत उस स्थल पर अब तक अटल खड़ा है, जहां पृथ्वी की दो परतें टकराकर एक-दूसरे के भीतर घुस गई थीं। परतों के टकराव की इस प्रक्रिया की वजह से हिमालय और उसके प्रायद्वीपीय क्षेत्र में भूकंप आते हैं। इसी प्रायद्वीप में ज्यादातर एशियाई देश बसे हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि रासायनिक क्रियाओं के कारण भी भूकंप आते हैं। भूकंपों की उत्पत्ति धरती की सतह से 30 से 100 किमी भीतर होती है। यह वैज्ञानिक धारणा भी बदल रही है कि भूकंप की विनाशकारी तरंगें जमीन से कम से कम 30 किमी नीचे से चलती हैं। ये तरंगें जितनी कम गहराई से उठेंगी, उतनी तबाही ज्यादा होगी और भूकंप का प्रभाव अधिक बड़े क्षेत्र में दिखेगा।

मनुष्य की उम्र बढ़ाने में शीतनिद्रा की मदद

मुकुल व्यास

यदि वैज्ञानिक शीत निद्रा के नियामक स्विचों की पहचान कर उनका उपयोग करें तो हम मनुष्यों को अत्यधिक चयापचय तनाव से उबरने, उम्र से संबंधित गिरावट को पलटने व पुरानी बीमारियों का इलाज करने में मदद कर सकते हैं। इससे उम्र से संबंधित बीमारियों में हस्तक्षेप और मदद करने की रणनीतियां खोजी जा सकती है। वैज्ञानिक काफी लंबे समय से जानवरों में शीतनिद्रा की खूबियों का अध्ययन कर रहे हैं। उन्होंने पता लगाया है कि शीतनिद्रा के जीन मनुष्यों में भी छिपे हुए हैं। ध्यान रहे कि भालू और चमगादड़ जैसे कुछ जीव-जंतु सर्दियों में दीर्घकालीन गहरी निद्रा में चले जाते हैं। इस अवस्था में उनकी शारीरिक क्रियाएं न्यूनतम स्तर पर होती हैं। ये कई महीनों तक बिना भोजन या पानी के जीवित रहते हैं। उनकी मांसपेशियां मजबूत रहती हैं। उनके शरीर का तापमान लगभग शून्य हो जाता है। ये जानवर अपनी दिल की धड़कन को कम कर सकते हैं।

ऊर्जा के लिए वे अपने शरीर के जमा वसा के भंडारों का उपयोग करते हैं। इस अवस्था को शीतनिद्रा अथवा हाइबरनेशन कहा जाता है। तकनीकी दृष्टि से शीतनिद्रा एक ऐसी अवस्था है जब शरीर का चयापचय (मेटाबॉलिज्म) धीमा हो जाता है। दूसरे शब्दों में शरीर को जीवित रखने वाली तमाम आंतरिक रासायनिक क्रियाएं धीमी हो जाती हैं। कोई जानवर कब धीमी शारीरिक गतिविधि की अवस्था में प्रवेश करेगा और कितने समय तक उस अवस्था में रहेगा, यह अलग-अलग जानवरों की जरूरतों पर निर्भर है। कुछ जानवर साल के कई महीनों तक शिथिल अवस्था में रहते हैं जबकि कुछ अन्य जानवर कुछ महीनों की अवधि में सिर्फ कुछ घंटों के लिए इस अवस्था में प्रवेश करते हैं। इन परिवर्तनों के बावजूद शीतनिद्रा में लीन जानवर स्वस्थ रहते हैं। वे उन स्थितियों से उबर जाते हैं जो अल्जाइमर, स्ट्रोक या डायबिटीज जैसी मनुष्य की बीमारियों से मेल खाती हैं। अब शोधकर्ताओं का मानना है कि मनुष्यों में भी यह क्षमता हो सकती है। उनका कहना है कि शीतनिद्रा को बढ़ावा देने वाले जीन मानव डीएनए में मौजूद हो सकते हैं।

ये आनुवंशिक लक्षण, जिन्हें शीतनिद्रा में रहने वाले जानवरों के लिए विशिष्ट माना जाता है, हमारे भीतर निष्क्रिय अवस्था में हो सकते हैं। साइंस पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार इन जीनों को समझने और उन्हें जानने से चयापचय संबंधी रोगों और स्नायु विकारों का उपचार हो सकता है। शीतनिद्रा में रहने वाले जंतु विशेष जीन का उपयोग कैसे करते हैं, यह पता लगाने के लिए वैज्ञानिकों ने वसा द्रव्यमान और मोटापे से जुड़े एक जीन समूह पर ध्यान केंद्रित किया। शीतनिद्रा में रहने वाले जानवर सर्दियों के दौरान वसा भंडारण और ऊर्जा को नियंत्रित करने के लिए इसका उपयोग करते हैं। यूटा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक के डॉ. क्रिस ग्रेग ने बताया कि इस जीन समूह की सबसे खास बात यह है कि यह आनुवंशिक दृष्टि से मानव मोटापे का सबसे प्रबल रिस्क फैक्टर है। शोधकर्ताओं को आसपास के डीएनए क्षेत्र मिले जिनका उपयोग शीतनिद्रा में रहने वाले जानवर जीन की गतिविधि को चालू या बंद करने के लिए करते हैं।

ये नियंत्रण स्वयं जीन को नहीं बदलते। बल्कि ये जीन के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं, ठीक उसी तरह जैसे किसी ऑर्केस्ट्रा में ध्वनि को नियंत्रित किया जाता है। ये क्षेत्र शीतनिद्रा में रहने वालों को सर्दियों से पहले वजन बढ़ाने और सोते समय वसा को कुशलतापूर्वक जलाने में मदद करते हैं। शोधकर्ताओं ने इन डीएनए क्षेत्रों को चूहों में प्रविष्ट किया। परिणाम स्पष्ट थे। कुछ चूहों का वजन आहार के आधार पर बढ़ा या घटा। अन्य चूहों के शरीर के समग्र चयापचय में परिवर्तन देखा गया। अध्ययन से जुड़ी शोधकर्ता सुसन स्टीनवांड ने बताया, जब आप इनमें से किसी एक तत्व को नष्ट कर देते हैं, तो सैकड़ों जीनों की गतिविधि बदल जाती है। शीतनिद्रा में रहने वाले जीन वसा और ऊर्जा को नियंत्रित करते हैं। ये डीएनए नियामक नए जीन नहीं बनाते। इसके बजाय, वे उन अवरोधों को हटाते हैं जो चयापचय में लचीलेपन को सीमित करते हैं। शीतनिद्रा में रहने वाले जानवर शायद कुछ बाधाओं को दूर करने के लिए विकसित हुए होंगे। इससे वे सक्रिय और निष्क्रिय अवस्थाओं के बीच आसानी से बदलाव कर सकते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर हम अपने जीन को शीतनिद्रा में रहने वालों की तरह थोड़ा और नियंत्रित कर सकें, तो शायद हम टाइप 2 डायबिटीज पर उसी तरह काबू पा सकते हैं जिस तरह शीतनिद्रा में रहने वाला जानवर शीतनिद्रा से सामान्य चयापचय अवस्था में वापस लौटता है।

हमारे और शीतनिद्रा में रहने वाले जानवरों के बीच मुख्य अंतर शायद यह है कि हम एक ही जीन समूह को कैसे नियंत्रित करते हैं। यह अंतर्दृष्टि इस संभावना को जन्म देती है कि मनुष्य किसी दिन अपने चयापचय को इसी तरह समायोजित कर सकते हैं। शीतनिद्रा ने समय के साथ जीनों को बदल दिया है। इन आनुवंशिक सुरागों को खोजने के लिए शोधकर्ताओं ने कई उन्नत विधियों का उपयोग किया। उन्होंने सबसे पहले उन डीएनए क्षेत्रों की खोज की जो अधिकांश स्तनधारियों में 10 करोड़ से अधिक वर्षों तक स्थिर रहे, लेकिन शीतनिद्रा में रहने वाली प्रजातियों ने हाल ही में नाटकीय परिवर्तन दिखाए। लंबे समय से संरक्षित डीएनए में इस तरह के अचानक बदलाव शीतनिद्रा व्यवहार के विशिष्ट अनुकूलन का संकेत देते हैं। इसके बाद शोधकर्ताओं ने उपवास करने वाले चूहों का अध्ययन किया। उपवास शीतनिद्रा में देखी जाने वाली कुछ जैविक स्थितियों को दर्शाता है।

किडनी को बेहतर बनाएंगे ये पांच योगासन

शरीर प्राकृतिक तरीके से यूरिक एसिड बनाता है, जब भोजन में पाए जाने वाले प्यूरीन को तोड़ने से बनता है। कुछ स्तर तक यूरिक एसिड की मात्रा ठीक है, लेकिन इसका स्तर बढ़ जाए तो यह जोड़ों में दर्द, सूजन और गाउट जैसी गंभीर समस्याएं पैदा कर सकता है। यूरिक एसिड रक्त में घुलकर किडनी के माध्यम से पेशाब के जरिए शरीर से बाहर निकल जाता है। यूरिक एसिड का उच्च स्तर इंसुलिन के कामकाज को प्रभावित करता है और मधुमेह का कारण बन सकता है। यूरिक एसिड के स्तर को प्राकृतिक तरीके से कम करने के साथ ही किडनी की कार्यक्षमता बढ़ाने और हृदय स्वास्थ्य को बेहतर करने के लिए योग फायदेमंद हो सकता है। कुछ योग आसन अतिरिक्त यूरिक एसिड को बाहर निकालने, किडनी में सुधार करने में मदद कर सकते हैं।

यूरिक एसिड भी कम करने में सहायक

भुजंगासन

ये आसन किडन के स्वास्थ्य के लिए गेम चेंजर की तरह है। यह पेट के अंगों को उत्तेजित करता है और किडनी में बेहतर रक्त परिसंचरण को बढ़ावा देता है, जिससे किडनी को बेहतर तरीके से काम करने में मदद मिलती है। भुजंगासन के अभ्यास के लिए पेट के बल लेटकर अपनी हथेलियों को कंधों के नीचे रखें। सांस लें और अपनी छाती को ऊपर उठाएं। कोहनी को थोड़ा मोड़कर रखें। गहरी सांस लेते हुए 15-20 सेकंड तक इस मुद्रा में रहें। भुजंगासन करते समय गहरी सांस लेते रहें और फिर धीरे-धीरे सांस छोड़ें।

सेतुबंधासन

ब्रिज पोज किडनी के कार्य को बेहतर बनाने और तनाव को कम करने के लिए बहुत बढ़िया है। किडनी और स्ट्रेस, ये दोनों ही यूरिक एसिड के स्तर को संतुलित रखने में मदद करते हैं। सेतुबंधासन के अभ्यास के लिए अपने घुटनों को मोड़कर और पैरों को कूल्हे की चौड़ाई से अलग करके अपनी पीठ के बल लेट जाएं। अब पैरों को जमीन पर दबाएं और अपने कूल्हों को छत की ओर उठाएं। 20-30 सेकंड तक इसी स्थिति में रुकें।

धनुरासन

धनुरासन गुर्दे की मालिश करने, उनके कार्य को उत्तेजित करने और डिटॉक्स को बढ़ावा देने के लिए एकदम सही है। साथ ही, यह रीढ़ को मजबूत करता है और पीठ दर्द से राहत देता है। इस आसन के अभ्यास के लिए पेट के बल लेटें और अपने घुटनों को मोड़ें। पीछे की ओर से अपने टखनों को पकड़ें। सांस लें और छाती और जांघों को जमीन से ऊपर उठाएं। गहरी सांस लेते हुए 15-20 सेकंड तक रुकें।

उत्तानासन

यह सरल आसन गुर्दे में रक्त परिसंचरण को बढ़ाता है, विषाक्त पदार्थों को हटाने में सहायता करता है और यूरिक एसिड के स्तर को नियंत्रण में रखता है। इसके अभ्यास के लिए सीधे खड़े होकर धीरे-धीरे अपने कूल्हों से आगे की ओर झुकें। अपने हाथों से फर्श को छूएं। सिर को आराम देते हुए गहरी सांस लें। इस मुद्रा को 20-30 सेकंड तक बनाए रखें। इसके अलावा इस आसन की मदद से पीठ, हिप्स और टखनों के दर्द को कम करने में मदद मिलती है। साथ ही शरीर अच्छे से स्ट्रेच भी होता है। इस योगासन की मदद से आप दिमाग को शांत कर सकते हैं और तनाव से दूर रह सकते हैं। सिर दर्द और अनिद्रा की समस्या में भी आप इस आसन को कर सकते है।

पवनमुक्तासन

पवनमुक्तासन पेट की चर्बी को कम करके शरीर को लचीला बनाने में मदद करता है। पवनमुक्तासन को अंग्रेजी में विंड रीलिविंग पोज के नाम से जाना जाता है। क्या आपको कभी पेट फूला हुआ या सुस्ती महसूस होती है? पवनमुक्तासन फंसी हुई गैसों को बाहर निकालने में मदद करता है, पाचन में सुधार करता है और डिटॉक्सिफिकेशन को बढ़ावा देता है। ये सभी यूरिक एसिड के स्तर को संतुलित करने में योगदान देते हैं। पवनमुक्तासन के अभ्यास के लिए पीठ के बल लेटकर पैरों को जोड़ें। फिर हाथ को शरीर के दोनों तरफ रखते हुए सांस छोड़े और घुटनों को पेट की तरफ मोड़ें। घुटनों को छाती तक ले जाकर सिर को घुटनों तक ले जाएं। अपने हाथों से पैरों को पकड़कर जितना हो सके, अपने पास लेकर आएं। इस मुद्रा में कुछ देर रहें और फिर धीरे-धीरे सामान्य स्थिति में आ जाएं।

हंसना मना है

मेहमान- और बताओ बेटा आगे का क्या प्लान है... बच्चा- बस आपके जाते ही बिस्कुट खाउंगा... वैसे भी नमकीन और मेवा तो आपने छोड़ी नहीं है....

पति (किताब पढ़ते हुए) - एक लेखक ने लिखा है कि पतियों को भी बोलने की आजादी होनी चाहिए... पत्नी (हंसते हुए) - देखो वो भी बेचारा लिख ही पाया, बोल नहीं पाया...

पिता- पढ़ ले नालायक, कभी तूने अपनी कोई बुक खोलकर भी देखी है। बेटा- हां पापा देखी है, बल्कि रोज देखता हूं उसे। पिता- कौन सी बुक पढ़ने लगा है तू? बेटा-फेसबुक।

गोलू- रात भर मुझे नींद नहीं आई। मोलू- क्यों? गोलू- रात भर मैंने सपने में देखा कि मैं जाग रहा हूं।

पत्नी- सुनो मेरे मुंह में मच्छर चला गया, अब क्या करूं? पति- पगली ऑल आउट पी ले। छह सेकंड में काम शुरू।

सोचा था 2 शादियां करूंगा, 1 पीटेगी तो दूसरी बचायेगी, रात को सपना देखा एक ने पकड़ रखा था, दूसरी पीट रही थी।

कहानी — कोयला और चंदन

चौधरी पहलवान का पूरा जीवन जरूरतमंदों की सहायता के लिए समर्पित हुआ था। जब उनका अंतिम समय नजदीक आया तो उन्होंने अपने बेटे को पास बुलाया। बेटा पास आ गया तो उन्होंने उससे कहा - देखो बेटा, मैंने अपना सारा जीवन दुनिया को शिक्षा देने में गुजार दिया। अब अपने अंतिम समय में मैं तुम्हें कुछ जरूरी बातें बताना चाहता हूं। लेकिन इससे पहले जरा तुम एक कोयला और चंदन का एक टुकड़ा उठा कर ले लाओ। बेटे को पहले तो यह बड़ा अटपटा लगा, लेकिन उसने सोचा कि अब पिता का हुक्म है तो यह सब लाना ही होगा। उसने रसोई घर से कोयले का एक टुकड़ा उठाया। संयोग से घर में चंदन की एक छोटी लकड़ी भी मिल गई। वह दोनों को लेकर अपने पिता के पास पहुंच गया। उसे आया देख पहलवान बोले- बेटा, अब इन दोनों चीजों को नीचे फेंक दो। बेटे ने दोनों चीजें नीचे फेंक दीं और हाथ धोने जाने लगा तो पहलवान बोले- जरा ठहरो बेटा। मुझे अपने हाथ तो दिखाओ। बेटे ने हाथ दिखाए तो वह उसका कोयले वाला हाथ पकड़ कर बोले, देखा तुमने। कोयला पकड़ते ही हाथ काला हो गया। लेकिन उसे फेंक देने के बाद भी तुम्हारे हाथ में कालिख लगी रह गई। गलत लोगों की संगति ऐसी ही होती है। उनके साथ रहने पर भी दुख होता है और उनके न रहने पर भी जीवन भर के लिए बदनामी साथ लग जाती है। दूसरी ओर सज्जनों का संग इस चंदन की लकड़ी की तरह है जो साथ रहते हैं तो दुनिया भर का ज्ञान मिलता है और उनका साथ छूटने पर भी उनके विचारों की महक जीवन भर बनी रहती है। इसलिए हमेशा अच्छे लोगों की संगति में ही रहना।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

रुका हुआ धन मिल सकता है। निवेश शुभ रहेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। रोमांस में सफलता मिलेगी, प्रसन्नता रहेगी। संतान की चिंता दूर होगी।

वृषभ

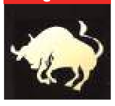

अप्रत्याशित खर्च होंगे। तनाव रहेगा। दूसरों के झगड़ों में न पड़ें। वस्तुएं संभालकर रखें। जोखिम न लें। नए संबंधों के प्रति सतर्क रहें। भूल करने से विरोधी बढ़ेंगे।

मिथुन

बेरोजगारी दूर करने के प्रयास सफल रहेंगे। वरिष्ठ जन सहायता करेंगे। अप्रत्याशित लाभ होगा। यात्रा होगी। व्यावसायिक अथवा निजी काम से सुखद यात्रा हो सकती है।

कर्क

वरिष्ठ जन सहायता करेंगे। रुके कार्यों में गति आएगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। रोजगार बढ़ेगा। सतर्कता से कार्य करें। व्यापार में नए अनुबंध आज नहीं करें।

सिंह

तंत्र-मंत्र में रुचि बढ़ेगी। यात्रा मनोरंजक रहेगी। निवेश शुभ रहेगा। बाहरी सहायता से काम होंगे। ईश्वर में रुचि बढ़ेगी। कामकाज की अनुकूलता रहेगी।

कन्या

चोट व रोग से बचें। जल्दबाजी से हानि होगी। दूसरों पर विश्वास हानि देगा। कार्य में बाधा होगी। पत्नी से आश्वासन मिलेगा। स्वयं के निर्णय लाभप्रद रहेंगे। दूसरों की नकल न करें।

तुला

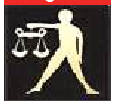

घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी। वैवाहिक प्रस्ताव मिल सकता है। व्यवसाय ठीक चलेगा। लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय अच्छा चलेगा। कार्यों में विलंब से चिंता होगी।

वृश्चिक

संपत्ति के बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। प्रसन्नता बनी रहेगी। व्यापार में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

धनु

पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। बौद्धिक कार्य सफल रहेंगे। प्रसन्नता रहेगी। धनार्जन होगा। रोजगार में उन्नति एवं लाभ की संभावना है।

मकर

शोक समाचार मिल सकता है। काम में मन नहीं लगेगा। विवाद से बचें। मेहनत अधिक होगी। आवास संबंधी समस्या हल होगी। आलस्य न करें। व्यावसायिक चिंता रहेगी।

कुम्भ

घर-बाहर पूछ-परख रहेगी। कार्य पूर्ण होंगे। आय बढ़ेगी। मनोरंजक यात्रा होगी। प्रसन्नता रहेगी। सहयोगी मदद नहीं करेंगे। व्ययों में कटौती करने का प्रयास करें।

मीन

पुराने मित्र व संबंधी मिलेंगे। अच्छी खबर मिलेगी। प्रसन्नता रहेगी। जोखिम न लें। लाभ होगा। कार्यपद्धति में विश्वसनीयता बनाएं रखें। आर्थिक अनुकूलता रहेगी।

मराठी में ट्वीट सही नहीं लिख पाने पर ट्रोल हुए बिग बी

अमिताभ बच्चन सोशल मीडिया पर खूब एक्टिव रहते हैं और यहां अपनी पर्सनल-प्रोफेशनल लाइफ से जुड़े अपडेट शेयर करते रहते है। उन्होंने रविवार देर रात सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर किया, जिसमें मराठी भाषा का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि वे मराठी भाषा नहीं जानते हैं। हालांकि, बिग बी ने अपने पोस्ट में बीते दिनों चले मराठी भाषा विवाद पर कोई टिप्पणी नहीं की है।

अमिताभ बच्चन ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक पर एक पोस्ट शेयर किया है। इसमें उन्होंने लिखा, किसी ने मुझसे कहा कि तुम्हें मराठी नहीं आती और तुम इतने साल मुंबई में रहते हो। यह तो सच है पर इसे सीखने की कोशिश करो, सीखना भी एक सलाम है। इसके अलावा शहंशाह ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर भी एक पोस्ट शेयर किया। इसमें उन्होंने लिखा है, जो सिखाता है वह भी सीख रहा है। इस पर यूजर्स ने उनकी बात से सहमति जताई है। एक यूजर ने लिखा, यह एकदम सच है। अमिताभ बच्चन ने अपने इस ट्वीट में वर्तनी की एक गलती कर दी है। उन्होंने वह को वि लिख दिया। तमाम यूजर्स इस गलती की तरफ भी बिग बी का ध्यान आकर्षित करा रहे हैं।

बता दें कि इससे पहले गणपति विसर्जन के दिन किए गए पोस्ट में अमिताभ बच्चन ने वर्तनी की एक गलती भूलवश कर दी थी। इस पर लोगों ने उन्हें टोका तो उन्होंने इसमें सुधार किया। उन्होंने बप्पा की तस्वीर शेयर करते हुए लिखा, गणपति बप्पा मोरया। लाल बाग च राजा। इसके बाद एक अन्य दूसरे पोस्ट में बिग बी ने लिखा, हमारे एक शुभचिंतक ने कहा कि हमने कल के ट्वीट में गलत शब्द लिख दिया है तो उसे सही कर रहा हूं। मैंने लिखा था लालबाग च राजा। उन्होंने कहा यह होना चाहिए चा सो सही कर रहा हूं। लालबाग चा राजा।

बॉलीवुड | मन की बात

अल्फा में एक्शन सीन करने की ले रही हूं ट्रेनिंग : सरवरी

शरवरी वाघ इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म अल्फा को लेकर सुर्खियों में हैं। हाल ही में उन्होंने मीडिया को बताया है कि फिल्म में उनका क्या किरदार है। उन्होंने बताया कि उनकी फिल्म अल्फा 25 दिसंबर को रिलीज हो रही है। वह इसको लेकर बहुत उत्साहित हैं क्योंकि इसमें उन्होंने अच्छा रोल किया है। शरवरी ने बताया कि वह फिल्म में अभिनय करने के लिए तैयारी कर रही हैं। वह इसमें एक्शन सीन करने के लिए ट्रेनिंग ले रही हैं। उन्होंने कहा यह बहुत अच्छा अनुभव है। फिल्म अल्फा का निर्देशन शिव रवैल कर रहे हैं। यह फिल्म महिलाओं पर केंद्रित है। इसमें आलिया भट्ट और शरवरी वाघ अहम किरदार निभा रही हैं। उम्मीद है कि बॉबी देओल भी फिल्म का हिस्सा होंगे। मुंज्या की अभिनेत्री ने बताया कि वह डिजाइनर अमित अग्रवाल के लिए रैंप वॉक करते हुए कैसा महसूस कर रही थीं। उन्होंने कहा यह अच्छा अनुभव था। अमित सर के लिए मैं पहली बार रैंप पर चली हूं। इस ड्रेस में मैं रैंप वॉक करके बहुत उत्साहित हूं। मैं इसमें सुंदर लग रही हूं। शरवरी ने कहा अमित सर ने मुझे बताया कि वह किस तरह से बनारसी साड़ियां लेकर आए और उन्हें गाउन में बदला। यह बहुत अच्छी कहानी है और इसे सुनकर मैं खुश हो गई हूं। शरवरी ने इब्राहिम अली खान के साथ वॉक किया। उन्होंने बताया कि उनके साथ उनकी जोड़ी काफी अच्छी रही। उन्होंने कहा अब्राहिम के साथ मैंने पहली बार रैंप वॉक किया है। वह उम्मीदों से भरे हुए हैं, वह खुशमिजाज हैं और मजे में रहते हैं। शरवरी वाघ ने 2015 में लव रंजन और संजय लीला भंसाली के साथ असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर करियर की शुरुआत की। अभिनेत्री ने 2021 में बंटी और बबली से बॉलीवुड में कदम रखा। आखिरी बार उन्हें फिल्म वेदा में देखा गया था। उन्हें फिल्म मुंज्या से पहचान मिली। अब वह अल्फा का हिस्सा होंगी।

रविवार को 'बागी 4' पर बरसे नोट, पांच फिल्मों का तोड़ा रिकार्ड

टाइगर श्रॉफ की बागी 4 सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है। तीसरे दिन मूवी की कमाई में उछाल देखने को मिला। हालांकि ओपनिंग डे के मुकाबले टाइगर की इस मूवी ने कम कमाई की है। इसके बाद भी टाइगर की मूवी ने तीन दिनों में ही 5 फिल्मों का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। इस लिस्ट में इस साल रिलीज हुई कई चर्चित फिल्में भी शामिल हैं। वहीं दूसरी ओर टाइगर की मूवी ने भले ही 5 फिल्मों का रिकॉर्ड तोड़ दिया हो लेकिन अभी तक 'लोका- चैप्टर 1-चंद्रा' के करीब नहीं पहुंच पाई है। चलिए जानते हैं अब तक किन-किन फिल्मों का रिकॉर्ड तोड़ा है?

Sacnilk की रिपोर्ट के अनुसार टाइगर की मूवी ने तीसरे दिन 10 करोड़ की कमाई की। इन आंकड़ों के हिसाब से 'बागी 4' ने तीन दिनों में 31.25 करोड़ की धमाकेदार कमाई कर ली है। इस मूवी ने कमाई के मामले में 5 फिल्मों को पीछे छोड़ दिया है। इनमें विक्रांत मैसी की 'आंखों की गुस्ताखियां', शाहिद कपूर की 'देवा', राजकुमार राव की मालिक, सारा अली खान की 'मेट्रो इन दिनों' और जॉन अब्राहम की 'द डिप्लोमैट' शामिल है।

टाइगर ने जिन 5 फिल्मों को पछाड़ा उनकी कमाई की बात की जाए तो 'आंखों की गुस्ताखियां' ने तीन दिनों में 1.3 करोड़, 'देवा' ने 19.15, मालिक ने 14.25 करोड़, 'मेट्रो इन दिनों' ने 16.75 करोड़ और 'द डिप्लोमैट' ने 13.3 करोड़ की कमाई की। टाइगर श्रॉफ की एक्शन मूवी 'बागी 4' से इन मूवीज की कमाई के आंकड़े काफी पीछे है।

क्या आपको पता है आखिर टी-शर्ट में टी का क्या है मतलब? आइए जानते हैं!

रोजाना इस्तेमाल की जाने वाली कई ऐसी चीजें हैं जिनका इस्तेमाल हम करते तो हैं, पर उनसे जुड़ी सामान्य जानकारियां हमारे पास नहीं होती हैं। ऐसे बहुत से सामान आपके घरों में, आपकी अलमारी में बंद होंगे, या फिर आप उन्हें पहनते भी होंगे, लेकिन आप उनके बारे में सबकुछ नहीं जानते होंगे। ऐसा ही कुछ टी-शर्ट के साथ है। आजकल हर कोई टी-शर्ट पहनता है, जिसमें बच्चों से लेकर बड़े तक और पुरुषों से लेकर महिलाओं तक शामिल हैं। कहा जा सकता है कि लोग इसे इसलिए भी पसंद करते हैं क्योंकि यह पहनने में आसान और हल्की होती है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि रोजाना पहनने वाली इस टी-शर्ट में टी का क्या मतलब होता है? टी-शर्ट पहनने में आरामदायक होती है, आसानी से चढ़ाई या उतारी जा सकती है और किसी भी तरह फोल्ड की जा सकती है, पर शर्ट की तरह उसमें तुरंत सिलवटें नहीं पड़ती हैं। लेकिन कभी सोचा है टी-शर्ट आगे टी क्यों लगा होता है। इसके पीछे दो दिलचस्प कहानियां हैं। आइए अब इसके बारे में विस्तार से जानते हैं। फैशन विशेषज्ञों के अनुसार, टी-शर्ट बनाना बहुत आसान है। इसमें कॉलर नहीं होता। इसकी आस्तीन सीधी होती हैं और यह शरीर के आकार से बिल्कुल मेल खाती है। आगे या पीछे से देखने पर यह अक्षर टी जैसी दिखती है। इसीलिए, फैशन विशेषज्ञों का कहना है, इसका नाम टी-शर्ट पड़ा। दूसरी ओर, ब्रिटिश अखबार द सन के अनुसार, पहले विश्व युद्ध के दौरान अमेरिकी सैनिक ट्रेनिंग के दौरान हल्की और आरामदायक शर्ट पहनते थे। उस समय इन्हें ट्रेनिंग शर्ट कहा जाता था। ऐसा लगता है कि समय के साथ इन्हें छोटा करके टी-शर्ट कर दिया गया। यूनाइटेड स्टेट्स की नेवी ने 1913 के आसपास अपने नेवी के सैनिकों के लिए टी शर्ट्स बनाना शुरू किया, जिससे वो अपनी वर्दी के नीचे पहनें तो उनके सीने पर बाल, वर्दी के सख्त कपड़े से छूकर ना टूटें। यही कारण है कि वो नीचे कॉटन या हल्के कपड़ों की टीशर्ट पहनने लगे।

अजब-गजब | भयावह और दुखद इतिहास को छुपाए हुए है यह द्वीप

इस द्वीप में सदियों पहले दफन कैदियों के कंकाल निकल रहे हैं जमीन से बाहर!

यह द्वीप आबादी से ज्यादा दूर नहीं है। फिर भी सुनसान है। आमतौर पर यहां कोई नहीं जाता है। पर एक जमाने में यहां बहुत जहाजों में कैद किए गए बहुत से कैदियों को भेजा गया था। किसी तरह की सजा भुगतने के लिए नहीं बल्कि सिर्फ उनको दफनाने के लिए भेजा जाता था। आज ये निर्जन द्वीप इसलिए चर्चा में है क्योंकि यहां कभी दफन हुए कैदी सैनिकों को कंकाल बाहर निकल रहे हैं। हम बात कर रहे हैं। केंट के तट पर बसा डेडमैन्स आइलैंड की। यह एक भयावह और दुखद इतिहास को छुपाए हुए है। द्वीप को देखकर ऐसा लगता है मानो किसी डरावनी फिल्म का सेट हो। यह छोटा-सा निर्जन द्वीप लंदन से मात्र 40 मील दूर स्वाले नदी के मुहाने पर क्वीनबरो के सामने है। यहाँ कोई इंसान नहीं बसता। यहां बस वे हड्डियां और ताबूत दिखते हैं जो कभी छह फीट मिट्टी के नीचे दफन थे, लेकिन अब समुद्री कटाव ने उन्हें दुनिया के सामने ला दिया।

यह द्वीप उन कैदियों की चुप्पी भरी चीखों का गवाह है,जो 18वीं और 19वीं सदी में जेल जहाजों में अपनी आखिरी साँसें ले चुके थे। इन जहाजों को जिन्हें 'प्रिजन हल्क्स' कहा जाता था। उस समय ब्रिटेन में छोटे-छोटे अपराधों, जैसे जेबकटी, के लिए

भी कठोर सजाएँ दी जाती थीं। कई कैदियों को ऑस्ट्रेलिया निर्वासित किया जाता था। लेकिन जो बीमार या कमजोर थे, वे इन जेल जहाजों में ही रह जाते थे। इन जहाजों में हालात इतने खराब थे कि बीमारियाँ, खासकर हैजा, तेजी से फैलती थीं। एक जहाज, जिसका नाम था 'रिट्रीब्यूशन', 1830 के दशक में हैजा महामारी का शिकार बना। इतिहासकार प्रोफेसर एरिक ग्रोव ने बीबीसी को बताया, उस समय बहुत सारे अपराधों की सजा मृत्युदंड थी, लेकिन मानवता और उपनिवेशों को बसाने के लिए, कैदियों को निर्वासित किया जाता था। जो यात्रा के लिए स्वस्थ नहीं थे, उन्हें जहाजों में छोड़ दिया जाता था।

इन जहाजों में 10 साल के बच्चों से लेकर बड़े तक कैद थे, और हर चार में से एक की मौत हो जाती थी। इन मृत कैदियों को बीमारी फैलने से रोकने के लिए डेडमैन्स आइलैंड पर बिना किसी नाम या निशान के दफनाया गया। उनके ताबूत और हड्डियाँ अब समुद्र के कटाव के कारण बाहर आ रही हैं, जिसे स्थानीय लोग 'कॉफिन बे' कहते हैं।

यह दृश्य इतना भयावह है कि 2017 में बीबीसी की 'इनसाइड आउट' टीम को जब इस द्वीप पर जाने की दुर्लभ अनुमति मिली, तो प्रस्तोता नताली ग्राहम ने कहा, यहाँ जो मैंने देखा, वह मुझे जिंदगी भर याद रहेगा। यह दुनिया में कहीं और जैसा नहीं है। निर्देशक सैम सुपल ने इसे एक हॉरर फिल्म के सेट जैसा बताया, जहाँ खुले ताबूत और हड्डियाँ बिखरी पड़ी हैं। यह द्वीप नेचुरल इंग्लैंड के स्वामित्व में है और दो निजी व्यक्तियों को पट्टे पर दिया गया है। यह एक महत्वपूर्ण पक्षी प्रजनन स्थल है, जहाँ आम लोगों नहीं आ सकते है। स्थानीय लोककथाएँ इस जगह को और रहस्यमयी बनाती हैं। कुछ लोग कहते हैं कि रात में द्वीप से भयानक चीखें और भौंकने की आवाजें आती हैं।

वोट चोरों को बचा रहा चुनाव आयोग : खरगे

कांग्रेस अध्यक्ष बोले- कर्नाटक 'मतदाता धोखाधड़ी' मामले में जानकारी छिपाई

» कहा- आयोग भाजपा के दबाव में आ गया है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने निर्वाचन आयोग पर 'अहम जानकारी छिपाने' का आरोप लगाया और दावा किया कि यह कथित 'वोट चोरी' के पीछे के लोगों को प्रभावी ढंग से बचा रहा है। खरगे ने 'एक्स' पर एक मीडिया रिपोर्ट साझा की, जिसमें दावा किया गया था कि 2023 में कर्नाटक विधानसभा चुनाव से पहले फॉर्म सात में जालसाजी कर मतदाताओं को हटाने के प्रयास से संबंधित मामला ठंडा पड़ गया है क्योंकि निर्वाचन आयोग ने अब तक आरोपियों को पकड़ने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण आंकड़े साझा नहीं किये हैं।

आयोग ने फिलहाल इन आरोपों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी लेकिन उसने अतीत में कांग्रेस के ऐसे सभी दावों को निराधार बताया था। खरगे ने प्रश्न किया, क्या निर्वाचन आयोग अब भाजपा का 'वोट चोरी' का अड्डा बन गया है? उन्होंने कहा, इस घटनाक्रम को समझिए। मई 2023 के कर्नाटक चुनावों से पहले कांग्रेस ने अलंद निर्वाचन क्षेत्र में बड़े पैमाने पर मतदाताओं के नाम हटने का खुलासा किया था। फॉर्म सात में जालसाजी कर एक बेहद जटिल प्रक्रिया के जरिए हजारों मतदाताओं के अधिकार छीन लिए गए। खरगे ने कहा, फरवरी 2023 में एक मामला दर्ज किया गया। जांच में 5,994 जाली आवेदन सामने आए जो मतदाता धोखाधड़ी के बड़े पैमाने पर प्रयास का स्पष्ट प्रमाण था। इसके बाद कांग्रेस सरकार ने दोषियों को पकड़ने के लिए सीआईडी जांच का आदेश दिया। खरगे ने कहा, लेकिन दिक्कत यहां है, जहां आयोग ने पहले जालसाजी का पता लगाने के लिए जरूरी दस्तावेजों का एक हिस्सा साझा किया था, वहीं अब उसने महत्वपूर्ण जानकारी छिपा ली है और 'वोट चोरी' के पीछे के लोगों को प्रभावी ढंग से बचा रहा है! कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, आयोग किसे बचा रहा है? भाजपा के 'वोट चोरी' विभाग को? क्या आयोग भाजपा के दबाव में आ रहा है ताकि सीआईडी जांच को पटरी से उतारा जा सके?'

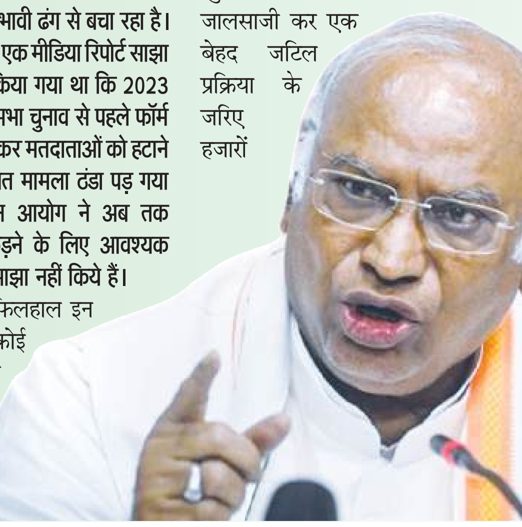

घुसपैठियों के समर्थन में धमकियां दे रहा विपक्ष : संबित पात्रा

बीजेपी ने आरोप लगाया कि इंडिया गठबंधन के नेता घुसपैठियों के समर्थन में बीजेपी नेताओं को धमकियां दे रहे हैं। बीजेपी प्रवक्ता संबित पात्रा ने कहा कि देश में विपक्ष घुसपैठिया बचाओ आंदोलन चला रहा और तंज किया कि राहुल गांधी की जो यात्रा निकली है वह घुसपैठिया बचाओ यात्रा बन गई है। पात्रा ने कहा कि चुनाव आयोग की स्पेशल इंटेंसिव ड्राइव से विपक्ष के अंदर विशेष रूप से कांग्रेस पार्टी और गांधी परिवार में एक प्रकार की हताशा और निराशा का माहौल है और उसके परिणाम स्पष्ट रूप से सामने आ रहे हैं। पात्रा ने कहा कि झारखंड के वरिष्ठ मंत्री इरफान अंसारी कहते हैं कि जो घुसपैठियों की बात करेगा, जो बांग्लादेशी कहेगा, भाजपा की कब्र हम झारखंड में खोद देंगे। संबित ने कहा कि ये सिर्फ एक धमकी नहीं है, बल्कि लोकतंत्र और समाज दोनों के लिए बेहद गंभीर और खतरनाक संकेत है। पात्रा ने अपील की कि कोलकाता हाई कोर्ट को इस मामले का स्वतः संज्ञान लेना चाहिए और ऐसे व्यक्ति को जेल भेजा जाना चाहिए।

पर्यावरण को बचाएगी रेट्रोफिट बस

» पुरानी डीजल वाली गाड़ी को ईवी में बदलने की तैयारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भारत में डीज़ल-टू-इलेक्ट्रिक रेट्रोफिट बस की शुरुआत हो गई है। एआरएम के रवीन्द्र सिंह बताते हैं कि भारत में 15 लाख डीज़ल बसें हैं। यदि इनमें से केवल 10 प्रतिशत भी परिवर्तित हो जाएं, तो उत्सर्जन, तेल आयात और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव बहुत बड़ा होगा। रेट्रोफटिंग भारत के लिए सार्वजनिक परिवहन को विद्युतीकृत करने का सबसे तेज और व्यावहारिक रास्ता है। यह पहल यूपीएसआरटीसी ने पुणे के कल्याणी पावरट्रेन और एम्ड रेट्रोफिट मोबिलिटी के सहयोग से की गई है। इस तकनीक में पारंपरिक डीज़ल इंजन की जगह सुरक्षित, प्रदूषण मुक्त और किफायती इलेक्ट्रिक पावरट्रेन लगाया गया है। बस को पूरी तरह से पुनर्निर्मित कर इस तरह तैयार किया गया है कि वह 10 से 15 वर्षों तक सुरक्षित रूप से जनता की सेवा कर सके।

इस बस ने पहले ही 18,000 किलोमीटर का ट्रायल रन पूरा कर लिया है और 1.4 किलोवाट-घंटा की ऊर्जा दक्षता दर्ज की है, जो कई पारंपरिक विकल्पों से बेहतर है। लेकिन इसका लाभ केवल क्षमता तक सीमित नहीं है। अनुमान के अनुसार, प्रत्येक परिवर्तित बस सालाना 60 टन से अधिक कार्बन उत्सर्जन रोक सकती है। जहां एक नई इलेक्ट्रिक बस की कीमत लगभग 1.5 से 1.8 करोड़ रुपये होती है, वहीं रेट्रोफिट समाधान इसकी आधी लागत से भी कम है, जिससे बड़े वित्तीय लाभ मिलते हैं। इसके अलावा, इलेक्ट्रिक ऊर्जा पर शिफ्ट होने से ईंधन खर्च और आयातित जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता घटती है। इलेक्ट्रिक ड्राइवट्रेन की सरल बनावट रख-रखाव लागत भी कम करती है, जिससे वित्तीय बोझ घटता है।

भारत ने आठ साल बाद जीता एशिया कप

» दक्षिण कोरिया को भारतीय हॉकी टीम ने दी 4-1 से करारी शिकस्त

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

राजगीर। बिहार के राजगीर में आयोजित हॉकी एशिया कप 2025 के खिताबी मुकाबले में रविवार को भारत ने पांच बार की विजेता दक्षिण कोरिया को 4-1 से हराकर खिताब अपने नाम कर लिया। भारतीय हॉकी टीम आठ साल बाद एशिया कप की चैंपियन बनी है। यह उसकी टूर्नामेंट में चौथी खिताबी जीत है। हरमनप्रीत सिंह की कप्तानी में भारतीय टीम ने मौजूदा चैंपियन कोरिया को पराजित कर न सिर्फ ट्रॉफी जीती, बल्कि अगले साल बेल्जियम और नीदरलैंड की संयुक्त मेजबानी में होने वाले विश्व कप के लिए भी क्वालिफाई कर लिया। इससे पहले भारत ने 2003, 2007 और 2017 में भी खिताब जीता था।

विश्व कप के लिए किया क्वालिफाई

बता दें 2007 और अब 2025 दोनों बार भारत ने कोरिया को हराकर खिताब जीता है। भारत 1982, 1985, 1989, 1994 और 2013 में उपविजेता रहा। मैच की शुरुआत से ही भारतीय खिलाड़ियों ने आक्रामक खेल दिखाया और पहले ही मिनट में सुखजीत सिंह ने गोल दागकर भारत को बढ़त दिला दी। पहला क्वार्टर भारत के नाम 1-0 से रहा। दूसरे क्वार्टर में दिलप्रीत सिंह ने अपना दूसरा और भारत का तीसरा गोल दागकर स्कोर 3-0 कर दिया। अंतिम क्वार्टर में भारत की ओर से अमित रोहिदास ने शानदार फील्ड गोल किया। हालांकि एक मिनट बाद ही कोरिया के डैन सन ने गोल दागकर अंतर 4-1 कर दिया, लेकिन इसके बाद भारतीय टीम ने मैच पर पूरी तरह नियंत्रण बनाए रखा।

पीएम मोदी, खेल मंत्री और सीएम योगी ने दी बधाई

इस ऐतिहासिक जीत पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, खेल मंत्री मनसुख मांडविया और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भारतीय खिलाड़ियों को बधाई दी। प्रधानमंत्री ने लिखा,इस शानदार जीत के लिए हमारी पुरुष हॉकी टीम को बधाई। यह जीत इसलिए और भी खास है क्योंकि उन्होंने गत विजेता दक्षिण कोरिया को हराया है! यह भारतीय हॉकी और भारतीय खेलों के लिए गौरव का क्षण है। हमारे खिलाड़ी और भी ऊंचाइयां छूते रहें और देश का नाम रोशन करते रहें, यही कामना है। खेल मंत्री ने लिखा, अद्भुत प्रदर्शन! भारतीय हॉकी टीम को बहुत-बहुत बधाई। वहीं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, ऐतिहासिक विजय... भारत वासियों को हार्दिक बधाई! भारतीय टीम के प्रत्येक सदस्य का हृदयतल से अभिनंदन! जय हिंद!

अब तक केंद्र ने राहत पैकेज क्यों नहीं दिया: चीमा

» मोदी नौ को बाढ़ प्रभावित पंजाब का करेंगे दौरा आपदा पर सियासत तेज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पीएम मोदी के पंजाब के 9 सितंबर के दौरे से पहले वहां पर आपदा को लेकर सियासी संग्राम मच गया हैं। आप ने भाजपा पर राजनीति करने का आरोप लगाया है। बता दें वरिष्ठ अधिकारी ने को बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 9 सितंबर को पंजाब के बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा करेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय ने पंजाब सरकार को सूचित किया है कि वह सबसे ज्यादा प्रभावित तीन ज़िलों, गुरदासपुर, अमृतसर और तरनतारन का दौरा कर सकते हैं। पंजाब दशकों में आई अपनी सबसे भीषण बाढ़ का सामना कर रहा है, उत्तर भारत में भारी बारिश के कारण सतलुज, व्यास और रावी तथा कई मौसमी नदियां उफान पर हैं।

केंद्र ने आश्वासन दिया है कि पंजाब को इस संकट में अकेला नहीं छोड़ा जाएगा और वह किसानों की मदद के लिए अल्पकालिक, मध्यम अवधि और दीर्घकालिक योजनाओं पर काम कर रहा है। अपने दौरे के दौरान, प्रधानमंत्री खेतों से गाद हटाने, बीमारियों के प्रकोप को रोकने और बाढ़ का पानी कम होने के बाद मृत पशुओं के सुरक्षित निपटान जैसे जरूरी मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। भाजपा के पंजाब हैंडल ने एक्स पर इस यात्रा की घोषणा करते हुए कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 9 सितंबर को पंजाब के गुरदासपुर आ रहे हैं। वह बाढ़ प्रभावित भाइयों-बहनों और किसानों से सीधे मिलेंगे, उनका दुख साझा करेंगे और पीड़ितों की मदद के लिए हर संभव कदम उठाएंगे।

केंद्रीय मंत्रियों का पंजाब दौरा तस्वीर खिंचवाने का मौका

चीमा ने दावा किया कि केंद्रीय मंत्रियों का पंजाब दौरा तस्वीर खिंचवाने का मौका मात्र था और उन्होंने भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार पर संकट के समय राज्य को विफल करने का आरोप लगाया। उन्होंने आरोप लगाया कि बाढ़ में जान-माल के नुकसान के बावजूद अभी तक किसी राहत पैकेज की घोषणा नहीं की गई है। चीमा ने कहा, जब भी अन्य राज्यों में बाढ़ आई, केंद्र ने कुछ ही दिनों में कार्रवाई की। पंजाब को बाढ़ से प्रभावित हुए 15 दिन हो गए हैं, लेकिन प्रधानमंत्री ने लोगों के साथ खड़े होने के लिए एक शब्द भी नहीं कहा है। उन्होंने आगे कहा कि 18 जिलों में कृषि क्षेत्र को भारी नुकसान हुआ है।

बाबुओं का दशकों से लगा है जमावड़ा

» नगर निगम लेखा विभाग में स्थानांतरण नीति पर उठी जांच की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। नगर निगम के लेखा विभाग में लंबे समय से जमे बाबुओं पर सवाल खड़े हो गए हैं। विभाग के बाबू किशुन वर्मा वर्ष 2012 से लगातार इसी शाखा में तैनात हैं। कर्मचारियों के नियमित स्थानांतरण की नीति लागू होने के बावजूद एक ही जगह पर वर्षों से टिके रहना अब चर्चा का विषय बन गया है।

सूत्र बताते हैं कि सबसे बड़ा खेल फाइलों से शुरू होता है और कमीशनबाजी में कुछ पुराने बाबुओं की भूमिका अहम मानी जाती है। निगम प्रशासन की निष्पक्षता पर सवाल उठ रहे हैं कि जब नियम सबके लिए समान हैं तो लेखा विभाग में यह अपवाद क्यों? जितना पुराना बाबू, उतनी मजबूत पकड़ और उतना ही गहरा कमीशन का खेल। यही वजह है कि स्थानांतरण नीति यहां महज़ कागज़ों तक ही सीमित रह गई है।

उपराष्ट्रपति चुनाव से पहले ही गरमाई सियासत

» लालू- सुदर्शन की मुलाकात पर बरसी बीजेपी
» विपक्ष ने भी साधा भाजपा पर निशाना
» संजय राउत के बयान पर भी घमासान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति चुनाव से पहले ही पूरे देश की राजनीति गरमाई हुई हैं जहां यूबीटी शिवसेना नेता राउत के बयान पर घमासान मचा है वहीं इंडिया गठबंधन के उपराष्ट्रपति उम्मीदवार सुदर्शन रेड्डी की लालू यादव से मुलाकात पर बीजेपी ने निशाना साधा है। बीजेपी नेता अमित मालवीय ने इस मुलाकात को सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी पर चौंकाने वाला बयान बताया है। उन्होंने कहा कि चारा घोटाले के दोषी से मुलाकात करना निंदनीय है।

वहीं कांग्रेस ने उपराष्ट्रपति चुनाव से पहले इंडिया ब्लॉक के सांसदों के लिए रात्रिभोज का आयोजन किया ताकि विपक्ष की एकता बनी रहे। उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए मंगलवार को वोटिंग होनी है। एनडीए की ओर से सीपी राधाकृष्णन और विपक्षी इंडिया ब्लॉक के सुदर्शन रेड्डी के बीच मुकाबला है। उपराष्ट्रपति पद से पहले इंडी गठबंधन की ओर से वीपी पद के लिए प्रत्याशी सुदर्शन रेड्डी ने लालू प्रसाद यादव ने मुलाकात की है। इस मुलाकात पर राजनीति तेज हो गई है। बीजेपी नेता अमित मालवीय ने इस मुलाकात की एक तस्वीर को शेयर किया है और इस मुलाकात को एक उच्च संवैधानिक पद के आकांक्षी व्यक्ति द्वारा सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी पर एक चौंकाने वाला बयान बताया।

संविधान की रक्षा, लोकतंत्र और राष्ट्रहित के लिए हो रहा है चुनाव : राउत

उपराष्ट्रपति चुनाव से एक दिन पहले, शिवसेना यूबीटी सांसद संजय राउत ने सोमवार को सांसदों से आग्रह किया कि वे सोच-समझकर, अपनी अंतरात्मा और राष्ट्रहित में मतदान करें। राउत ने पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की सार्वजनिक रूप से अनुपस्थिति पर भी सवाल उठाए। राउत ने कहा कि देश के सांसद उपराष्ट्रपति पद के लिए मतदान करते हैं, चाहे वह लोकसभा हो या राज्यसभा। कल प्रधानमंत्री मॉक सेशन में मौजूद थे। आज हमारे लोग मॉक सेशन में बैठेंगे। उपराष्ट्रपति पद के लिए यह चुनाव देश के संविधान की रक्षा, लोकतंत्र और राष्ट्रहित के लिए हो रहा है। संजय राउत ने आगे कहा कि हमारे पूर्व उपराष्टपति कहाँ हैं, मुझे नहीं पता। जब तक धनखड़ सार्वजनिक रूप से सामने नहीं आते या सामने नहीं आते, हम यह सवाल पूछते रहेंगे। हमारे पूर्व उपराष्ट्रपति कहाँ हैं? लोकतंत्र की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए राउत ने कहा कि इस बात को ध्यान में रखते हुए देश के सभी सांसदों को मतदान करना चाहिए। अगर लोकतंत्र की बात करने वाले को इस तरह गायब कर दिया जाए, तो मेरा मानना है कि देश का लोकतंत्र खतरे में है। यह ध्यान में रखते हुए कि आज भाजपा के पास बहुमत नहीं है, सभी सांसदों को यह सोचकर मतदान करना चाहिए कि देश की आत्मा क्या चाहती है और उनकी अपनी अंतरात्मा क्या चाहती है।

उपराष्ट्रपति के निर्वाचक मंडल में लालू कोई वोट नहीं : मालवीय

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में बीजेपी नेता अमित मालवीय ने लिखा कि सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश और इंडी गठबंधन के संयुक्त उम्मीदवार बी. सुदर्शन रेड्डी ने हाल ही में चारा घोटाले के दोषी लालू प्रसाद से मुलाकात की, जो संसद के सदस्य भी नहीं हैं और उपराष्ट्रपति के निर्वाचक मंडल में उनका कोई वोट नहीं है। यह न केवल भयानक दिखावा है, बल्कि यह एक उच्च संवैधानिक पद के इच्छुक व्यक्ति द्वारा सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी पर एक चौंकाने वाला बयान है। पोस्ट में मालवीय ने लिखा कि इससे भी ज्यादा चौंकाने वाली बात है सामान्य संदिग्धों, सेवानिवृत्त न्यायाधीशों और संवैधानिक नैतिकता के स्वयंभू संरक्षकों की चुप्पी से उनका पाखंड उजागर हो गया है।

कांग्रेस ने किया सांसदों के लिए रात्रिभोज का आयोजन

उपराष्ट्रपति चुनाव से ठीक एक दिन पहले कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने सोमवार शाम को संसद भवन में इंडिया ब्लॉक के सांसदों के लिए रात्रिभोज का आयोजन किया है। उल्लेखनीय है कि यह बैठक विपक्ष की एकता और उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार बी. सुदर्शन रेड्डी के समर्थन को मज़बूत करने के लिए है। गौरतलब है कि 21 जुलाई को संसद के मानसून सत्र के पहले दिन स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए जगदीप धनखड़ के इस्तीफ़ा देने के बाद उपराष्ट्रपति का पद रिक्त हो गया था।

खबरों में बने रहने के लिए ऐसे बयान देते हैं राउत : नरेश म्हस्के

शिवसेना सांसद नरेश म्हस्के ने पूर्व उपराष्ट्रपति धनखड़ पर राउत के बयान की आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि वह सिर्फ़ खबरों में बने रहने के लिए ऐसे बयान देते हैं। म्हस्के ने कहा, संजय राउत सिर्फ़ ख़बरों में बने रहने के लिए ऐसे बयान देते हैं... शिवसेना (यूबीटी) के पास संख्याबल नहीं है... उन्होंने कभी जनता के हित के लिए काम नहीं किया... 9 सितंबर को होने वाले उपराष्ट्रपति चुनाव में इंडिया ब्लॉक समर्थित न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) बी सुदर्शन रेड्डी और एनडीए के उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन के बीच सीधा मुकाबला होगा।

पीएम का मणिपुर दौरा वहां के लोगों का अपमान : जयराम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पीएम मोदी के मणिपुर के आगामी दौरे के लेकर सियासत गरमा गई है। कांग्रेस ने इतनी देर बाद हो रहे दौरे के पर सवाल उठाया है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने प्रधानमंत्री मोदी के प्रस्तावित तीन घंटे के मणिपुर दौरे को राज्य के लोगों का अपमान बताया है।?

उन्होंने कहा कि 29 महीनों के इंतजार के बाद इतनी कम अवधि की यात्रा प्रधानमंत्री की असंवेदनशीलता को दर्शाती है, जबकि इस दौरे में जनसभाएं और परियोजनाओं का उद्घाटन शामिल है। कांग्रेस महासचिव एवं संचार प्रभारी जयराम रमेश ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 13 सितंबर को प्रस्तावित मणिपुर यात्रा की आलोचना करते हुए इसे राज्य के लोगों का अपमान बताया। एक्स पर एक पोस्ट में, कांग्रेस सांसद ने यात्रा की तैयारियों के बारे में एक अखबार की कटिंग साझा की और कहा कि ऐसा लग रहा है कि प्रधानमंत्री मणिपुर में केवल तीन घंटे ही बिताएँगे। जयराम रमेश ने लिखा कि प्रधानमंत्री की 13 सितंबर को प्रस्तावित मणिपुर यात्रा का उनके समर्थक स्वागत कर रहे हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि वह राज्य में लगभग 3 घंटे ही बिताएँगे - जी हाँ, सिर्फ़ 3 घंटे। इतनी जल्दबाज़ी में की गई यात्रा से वह क्या हासिल करना चाहते हैं? जयराम रमेश ने आगे कहा कि यह वास्तव में राज्य के लोगों का अपमान है, जिन्होंने 29 लंबे और कष्टदायक महीनों तक उनका इंतज़ार किया है। 13 सितंबर को प्रधानमंत्री वास्तव में मणिपुर नहीं आएँगे, जिन्होंने एक बार फिर मणिपुर के लोगों के प्रति अपनी उदासीनता और असंवेदनशीलता प्रदर्शित की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस महीने की 13 तारीख को कुछ घंटों के लिए मणिपुर पहुँचेंगे और दो स्थानों पर जनसभाएँ करेंगे। प्रधानमंत्री की राज्य यात्रा पर चर्चा के लिए आज इम्फाल के राजभवन में एक बैठक आयोजित की गई।

आतंकी साजिश मामले में एनआईए की बड़ी कार्रवाई जम्मू-कश्मीर समेत पांच राज्यों में 22 जगहों पर रेड

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (एनआईए) ने लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) से जुड़े एक संदिग्ध आतंकी नेटवर्क को निशाना बनाकर एक बड़े अभियान के तहत पांच राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों - तमिलनाडु, जम्मू और कश्मीर, उत्तर प्रदेश, बिहार, कर्नाटक, महाराष्ट्र, दिल्ली और आंध्र प्रदेश - में 22 ठिकानों पर एक साथ छापे मारे।

इस मामले की सबसे पहले द फेडरल ने रिपोर्ट की थी, जिससे भारत में चरमपंथी गतिविधियों की चल रही जाँच में एक महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। अधिकारियों के अनुसार, यह कार्रवाई एक आतंकी साजिश से जुड़े मामले की जांच के सिलसिले में की जा रही है। अधिकारियों के अनुसार जम्मू-

कश्मीर में नौ, बिहार में आठ, उत्तर प्रदेश में दो तथा कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में एक-एक स्थानों पर तलाशी ली जा रही है। उन्होंने बताया कि जम्मू-कश्मीर में बारामूला, कुलगाम, अनंतनाग और पुलवामा जिलों में कार्रवाई जारी है।

इस कार्रवाई के संबंध में अभी और जानकारी नहीं मिल पाई है। ये छापे उस मामले से जुड़े हैं जिसने 26 अप्रैल, 2025 को तमिलनाडु के आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) द्वारा बिहार के कटिहार जिले के 22 वर्षीय युवक अखलातुर मुहम्मद को चेंगलपट्टू से गिरफ्तार करने के बाद तूल पकड़ा था।

एनआईए का नवीनतम अभियान जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, बिहार, कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लोगों को एक समन्वित आतंकी नेटवर्क से जोड़ने वाली खुफिया जानकारी पर आधारित है। सूत्रों से संकेत मिलता है कि एजेंसी ने जम्मू-कश्मीर में कई संदिग्ध चरमपंथियों की पहचान की है, जिनके संचार से इन राज्यों के लोगों के साथ संबंधों का पता चला है। इन छापों का उद्देश्य कट्टरपंथ, हथियारों की खरीद और आतंकी गतिविधियों की संभावित योजनाओं के सबूत उजागर करना है।

नेपाल में सड़क पर युवाओं का बवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

काठमांडू। भ्रष्टाचार और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर प्रतिबंध लगाने के सरकार के फैसले के खिलाफ नेपाल में युवाओं ने सोमवार को काठमांडू में जमकर विरोध प्रदर्शन किया। जेनरेशन जेड पीढ़ी के युवाओं ने सड़कों पर सरकार के फैसले के खिलाफ आवाज बुलंद की।

प्रदर्शन के दौरान लोग काफी उग्र हो गए। देखते ही देखते हालात इतने बिगड़ गए कि पुलिस को हल्का लाठीचार्ज करना पड़ा। भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने आंसू गैस के गोले भी दागे। नेपाल में सरकार के भ्रष्टाचार और हाल ही में सोशल मीडिया पर प्रतिबंध के खिलाफ प्रदर्शन तेज हो गए हैं। जेनेरेशन जेड ने सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन किया। युवाओं ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की।

सीएम के पति सरकारी मीटिंग में पहुंचने पर सियासी बवाल

आप का हमला- बोली- बीजेपी ने दिल्ली को बनाया फुलेरा पंचायत, सुपर सीएम चला रहे राज! भाजपा का भी पलटवार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की सरकारी बैठक में पति मनीष गुप्ता की मौजूदगी पर विवाद खड़ा हो गया है। आम आदमी पार्टी ने इसे फुलेरा पंचायत से तुलना करते हुए संवैधानिक मर्यादाओं का उल्लंघन बताया, जबकि भाजपा ने इसे सामान्य प्रक्रिया और सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका करार दिया। इस घटना ने दिल्ली की राजनीति में गैर-निर्वाचित व्यक्तियों की भागीदारी पर नई बहस छेड़ दी है।

आम आदमी पार्टी (आप) ने दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर अपने पति को सरकारी कामों में शामिल होने की अनुमति देने का आरोप लगाया और प्रशासन की तुलना लोकप्रिय वेब सीरीज़ की काल्पनिक फुलेरा पंचायत से की। एक सरकारी बैठक की तस्वीर साझा करते हुए, जिसमें मुख्यमंत्री के पति मनीष गुप्ता उनके बगल में बैठे थे, आप ने कहा कि राजधानी को एक ग्राम पंचायत की तरह चलाया जा रहा है जहाँ गैर-निर्वाचित परिवार के सदस्य प्रभाव रखते हैं। दरअसल, रेखा गुप्ता ने एक्स पर एक पोस्ट साझा किया था। गुप्ता ने एक्स पोस्ट में बताया कि बैठक में अधिकारियों को क्षेत्र में चल रहे कार्यों की प्रगति का नियमित रूप से आकलन करने और निर्धारित समय सीमा के भीतर विस्तृत स्थिति रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया।

भाजपा ने छह महीने में दिल्ली को बर्बाद कर दिया : संजय सिंह

आप नेता संजय सिंह ने भी इसी तरह की राय दोहराते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में दो मुख्यमंत्री नियुक्त किए हैं। उन्होंने कहा, रेखा गुप्ता मुख्यमंत्री हैं, उनके पति सुपर मुख्यमंत्री हैं। भाजपा ने छह महीने में दिल्ली को बर्बाद कर दिया है। इस बीच, भाजपा ने आप के आरोपों का जवाब देते हुए कहा कि गुप्ता के पति के सरकारी बैठक में बैठने में कुछ भी ग़लत नहीं था।

देश की राजधानी में लोकतंत्र और संवैधानिक मर्यादाओं का उड़ रह मजाक : भारद्वाज

आप नेता सौरभ भारद्वाज ने सवाल उठाया कि रेखा गुप्ता ने अपने पति को बैठक में क्यों आने दिया और इसकी तुलना काल्पनिक गाँव फुलेरा से की, जहाँ महिला प्रधान के पति का दबदबा है। भारद्वाज ने एक्स पर लिखा कि दिल्ली सरकार फुलेरा पंचायत में तब्दील हो गई है। जैसे फुलेरा में महिला सरपंच का पति असली मुखिया की भूमिका में था, वैसे ही आज दिल्ली में मुख्यमंत्री के पति सरकारी बैठकों में बैठे नज़र आ रहे हैं। यह पूरी तरह से असंवैधानिक है। देश की राजधानी में लोकतंत्र और संवैधानिक मर्यादाओं का इस तरह मज़ाक उड़ाया जा रहा है।भारद्वाज ने भाजपा पर पाखंड का आरोप लगाते हुए कहा कि पार्टी अक्सर कांग्रेस पर वंशवादी राजनीति का आरोप लगाती रही है, लेकिन अब उसी को बढ़ावा दे रही है।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 । Email: daily4pm@gmail.com । website: www.4pm.co.in । RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।